प्रारंभिक शिक्षा में डिप्लोमा
(डी.एल.एड.)

पाठ्यक्रम–507

समुदाय और प्राथमिक शिक्षा

ब्लॉक–3

विद्यालय तथा समुदाय सहभागिता प्रबंधन

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

A 24/25, सांस्थानिक क्षेत्र, सैक्टर–62 नौएडा,

गौतम बुद्ध नगर उत्तर प्रदेश–201309

वैबसाइट : www.nios.ac.in

विशेषज्ञ समिति

डॉ. सीतांशु एस. जेना
(अध्यक्ष)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा

श्री बी. के. त्रिपाठी
आईएएस, प्रधान सचिव, मासवि
झारखंड सरकार, रांची

प्रो. ए. के. शर्मा
भूतपूर्व निदेषक,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रषिक्षण परिषद
नई दिल्ली

प्रो. एस.वी.एस. चौधरी
भूतपूर्व उपाध्यक्ष
रा.अ.शि.प. नई दिल्ली

प्रो. सी.बी. शर्मा
शिक्षा विद्यापीठ,
इ.गा.रा.मु.वि. नई दिल्ली

प्रो. एस. सी. अगरकर
प्रो. होमी भाभा विज्ञान षिक्षा केन्द्र, मुम्बई

प्रो. नागराजु
भूतपूर्व प्रधानाचार्य
क्षे.शि.सं. (रा.शै.अ.प्र.प.) मैसूर

प्रो. के. दोराईसामी
भूतपूर्व विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा
एवं विस्तार विभाग, रा.शै.अ.प्र.प.
नई दिल्ली

डा. बी. फलाचन्द्र
भूतपूर्व अनुदेशन विभागाध्यक्ष
क्षे.शि.सं. (रा.शै.अ.प्र.प.) मैसूर

प्रो. के.के. वशिष्ठ
भूतपूर्व विभागाध्यक्ष, प्रा. शि. विभाग
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

प्रो. वसुधा कामठ
कुलपति
एस.एन.डी.टी.,
महिला वि.वि. मुंबई

डा. हुमा मसूद
शिक्षा विशेषज्ञ, यूनस्को
नई दिल्ली

प्रो. पवन सुधीर
विभागाध्यक्ष, कला एवं सौंदर्य विभाग,
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

श्री बिनय पटनायक
शिक्षा विशेषज्ञ, यूनिसेफ, रांची

डॉ. कुलदीप अग्रवाल
निदेषक (षैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा

प्रो, एस. सी. पांडा
वरिष्ठ सलाहकार, (शैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा

डा. कंचन बाला
कार्यकारी अधिकारी (षैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा

पाठ्य समन्वयक एवं संपादक

प्रो. एस. सी. पांडा
वरिष्ठ परामर्षदाता, अध्यापक षिक्षा, शैक्षिक विभाग
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा

डॉ. कंचन बाला
कार्यकारी अधिकारी (षैक्षिक विभाग)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा

पाठ लेखक

डॉ. स्मृति पाहवा
प्रथम, नई दिल्ली

डॉ. निशा सिंह
उप निदेषक, आई यू सी, इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. प्रदीप कुमार
सहायक प्रोफेसर
एस ई डी एस, इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. वी. पी. गर्ग
भूतपूर्व प्रोफेसर रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

डॉ. राजश्री प्रधान
वरिष्ठ प्रवक्ता, डायट, कडकडडूमा, दिल्ली

डॉ. चम्पा पन्त
वरिष्ठ प्रवक्ता, डायट, राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली

डॉ. हेमा पन्त
उप निदेषक, क्षेत्रीय कार्यालय, इग्नू, नोएडा

डॉ. नीरज त्रिवेदी
प्रथम, नई दिल्ली

श्री कार्तिक दलाई
उप निदेषक, क्षेत्रीय कार्यालय, इग्नू, **द्वारका**

डॉ. सुनीता चुघ
सहायक प्रोफेसर, न्यूपा, नई दिल्ली

पाठय वस्तु संपादक

डॉ. सीतांशु एस. जेना
अध्यक्ष,राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा

अनुवादक

डा. चंपा पन्त
वरिष्ठ प्रवक्ता, डायट
राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली

श्रीमति अनुराधा
प्रवक्ता, डायट,
कडकडडुमा, दिल्ली

डा. अनिल कुमार तेवतिया
वरिष्ठ प्रवक्ता
एस.सी.ई.आर.टी. दिल्ली

डा. सतनाम सिंह
वरिष्ठ प्रवक्ता
एस.सी.ई.आर.टी. दिल्ली

डा. सत्यवीर सिंह
प्रधानाचार्य
एस. एन. आई. कॉलिज, पिलाना, बागपत (उ.प्र.)

डा. वीरेन्द्र सिंह
रीडर, डी. जे. पी. जी. कालेज, बड़ौत
बागपत(उ.प्र.)

कार्यक्रम समन्वयक

डॉ. कुलदीप अग्रवाल
निदेषक (षैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा

प्रो, एस. सी. पांडा
वरिष्ठ परामर्षदाता (अध्यापक षिक्षा),
शैक्षिक विभाग,
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा

डॉ. कंचन बाला
कार्यकारी अधिकारी (षैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा

आवरण संकल्पना एवं रूपांकन

श्री डी.एन. उप्रेती
प्रकाशन अधिकारी, मुद्रण,
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा

धर्मानन्द जोशी
कार्यकारी सहायक, मुद्रण
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा

टाईपसैटिंग

मैसर्स शिवम ग्राफिक्स
रानी बाग, 431, ऋषि नगर
दिल्ली–110034

लिपिकीय सहयोग

सुश्री सुषमा, कनिष्क सहायक, शैक्षिक,
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, नोएडा

अध्यक्ष का संदेश .....

प्रिय अधिगमकर्ता,

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत एक स्वायत्त संगठन है। माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर पर लगभग 2.02 करोड़ अधिगमकर्ताओं के साथ वर्तमान में यह विश्व की सबसे बड़ी मुक्त विद्यालयी शिक्षण प्रणाली है। राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के पास अपने शैक्षिक एवं व्यावसायिक कार्यक्रमों के लिए देश में और उसके बाहर 15 से अधिक क्षेत्रीय केंद्रों, 2 उपकेंद्रों और 5000 अध्ययन केंद्रों का राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय तन्त्र है। यह अधिगमकर्त्ताओं को मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से केंद्रिक गुणवत्ता-शिक्षा, कौशल विकास और प्रशिक्षण का उपागम उपलब्ध कराता है। इसके कार्यक्रमों का वितरण मुद्रित सामग्री के माध्यम से मुखाभिमुख शिक्षण से युग्मित, सूचना एवं संचार तकनीकि, श्रव्य-दृश्य कैसेट्स, आकाशवाणी प्रसारण, दूरदर्शन प्रसारण आदि से अनुपूरित होता है।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान को प्रारंभिक स्तर पर अप्रशिक्षित शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए अधिकार संपन्न किया गया है। प्रारम्भिक शिक्षा डिप्लोमा कार्यक्रम के लिए प्रशिक्षण प्रस्ताव राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान द्वारा उस क्षेत्र में कार्यरत अन्य अभिकरणों के सहयोग से विकसित किया गया है। यह संस्थान शिक्षा का अधिकार कानून 2009 के अनुसार विभिन्न राज्यों में अप्रशिक्षित अंत:सेवी शिक्षकों के लिए प्रारंभिक शिक्षा कार्यक्रम में एक बहुत ही नवीन एवं चुनौतीपूर्ण द्वि-वर्षीय उपाधि प्रदान करता है।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के प्रारंभिक शिक्षा डिप्लोमा कार्यक्रम के इस उपाधि पाठ्यक्रम में आप सबका स्वागत करते हुए मुझे सुखानुभूति हो रही है। मैं आपके राज्य के बच्चों के प्रारंभिक-शिक्षा में योगदान के लिए आपका आभार व्यक्त करता हूं। शिक्षा के अधिकार कानून 2009 के अनुसार सभी शिक्षकों के लिए व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित होना अनिवार्य हो गया है। हम समझते हैं कि एक अध्यापक के रूप में आपका अनुभव, एक अच्छा शिक्षक होने के लिए आवश्यक अपेक्षित कौशल आपको पहले ही प्रदान कर चुका है। चूंकि कानून द्वारा अब यह अनिवार्य है अत: आपको यह कार्यक्रम पूर्ण करना पड़ेगा। मैं आश्वस्त हूं कि आपके द्वारा अब तक संचित ज्ञान और अनुभव निश्चय ही आपको इस कार्यक्रम में सहयोग प्रदान करेगा।

प्रारम्भिक शिक्षा डिप्लोमा कार्यक्रम में प्रशिक्षण मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा विधि के माध्यम से दिया जाता है और एक शिक्षक के रूप में आपके नियमित कार्य को बाधित हुए बिना आपको पेशेवर रूप से प्रशिक्षित होने का विस्तृत अवसर प्रदान करता है। विशेष रूप से आपके उपयोग के लिए विकसित स्व-अनुदेशात्मक सामग्री आपको सेवा के लिए योग्य होने के अतिरिक्त आपकी समझ सृजित करने और एक अच्छा शिक्षक होने में सहायक होनी चाहिए।

इस महान प्रयत्न में शुभकामनाओं सहित!

एस.एस. जेना

अध्यक्ष

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

पाठ्यक्रम अवधारणा मानचित्र

पाठ्यक्रम-507 समुदाय और प्राथमिक शिक्षा
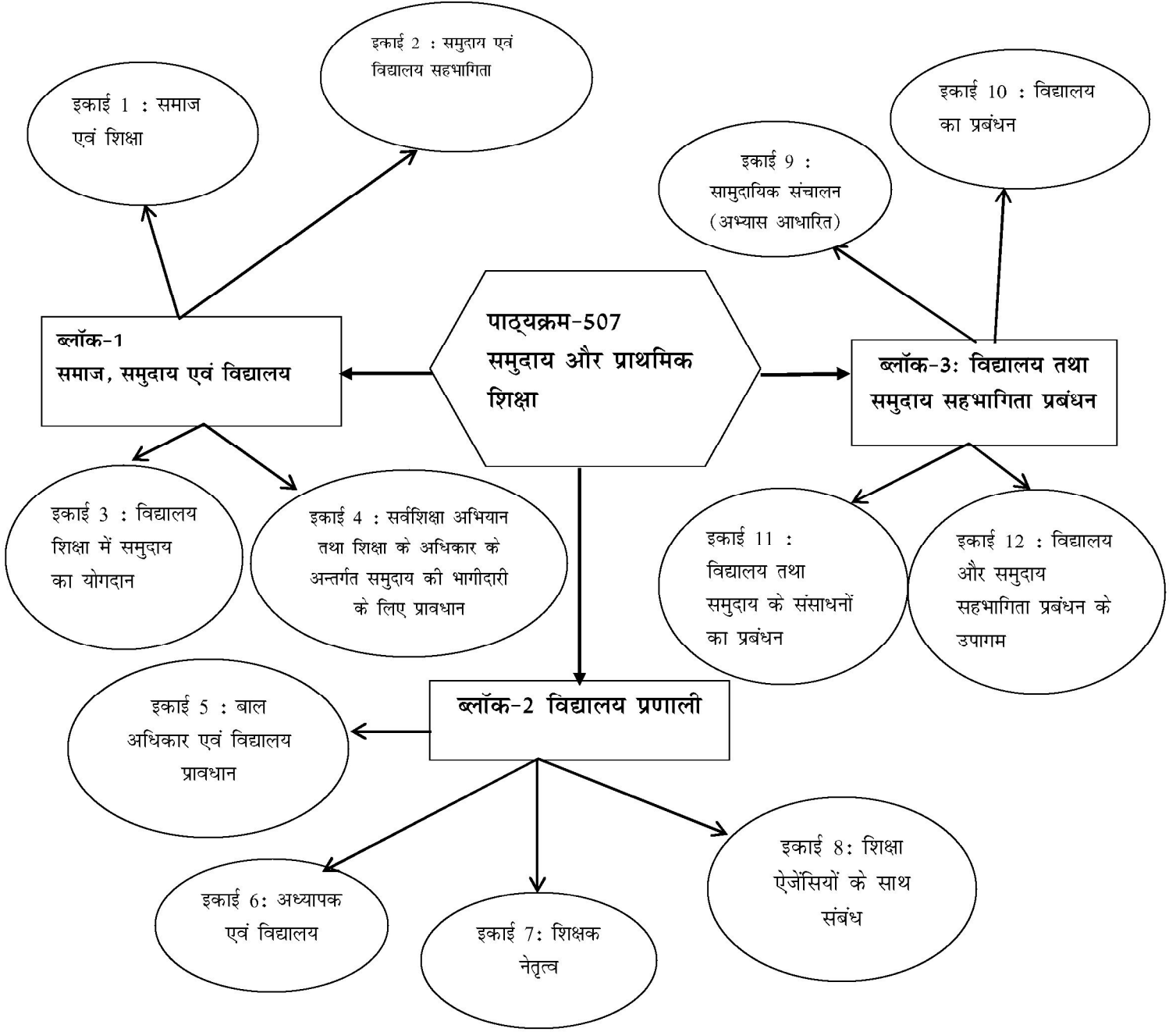
श्रेय अंक (4=3+1)

खण्ड	इकाई	इकाई का नाम	सैद्धान्तिक अध्ययन अवधि (घंटों में)		प्रयोगात्मक अध्ययन
			विषय-वस्तु	क्रियाकलाप	
ब्लॉक-1 समाज, समुदाय एवं विद्यालय	**इकाई 1**	समाज एवं शिक्षा	3	1	• परिवेष में उपलब्ध षैक्षिक सुविधाओं तथा समाज के मध्य संबंध स्थापित करना।
	इकाई 2	समुदाय एवं विद्यालय	4	2	• अपने विद्यालय के षिक्षार्थियों के सांस्कृतिक विकास में समुदाय के प्रभाव का पता लगाना। • अपने विद्यालय प्रणाली में उदाहरण सहित जीवन कौषलों के विकास की प्रक्रिया का पता लगााना।
	इकाई 3	विद्यालय शिक्षा में समुदाय का योगदान	4	2	• क्षेत्रीय समुदाय आपके विद्यालय को किस प्रकार योगदान करता है? • आपका विद्यालय अपने हित के लिए क्षेत्रीय संसाधनों का संचालन किस प्रकार करता है?
	इकाई 4	सर्वशिक्षा अभियान तथा शिक्षा के अधिकार के अन्तर्गत समुदाय की भागीदारी के लिए प्रावधान	4	3	• उन परिस्थितियों का पता लगाना जहां आपका विद्यालय षिक्षा के अधिकार कानून का जरूरतों को पूरा नहीं कर पाता है? • अपने विद्यालय प्रणाली में अभिथावक षिक्षक संघ के योगदान का पता लगाना।
ब्लॉक-2 विद्यालय प्रणाली	**इकाई 5**	बाल अधिकार एवं विद्यालय प्रावधान	4	2	• अपने विद्यालय में उपलब्ध षैक्षिक तथा भौतिक सुविधाओं के उपयोग करने में आने वाली समस्याओं का पता लगाना। • उन परिस्थितियों का पता लगाना जहां आपके विद्यालय में बाल अधिकारों की अवहेलना की जाती हो।
	इकाई 6	अध्यापक एवं विद्यालय	4	2	• उन परिस्थितियों का पता लगाना जहां आप अपने विद्यालय में एक षिक्षक की भूमिका का निर्वहन करनें में असफल होते हैं। • आप अपने आपको समुदाय के नेता के रूप में कैसे सिद्ध करोंगे।
	इकाई 7	शिक्षक नेतृत्व	4	2	• आप किस प्रकार के नेतृत्व को पसन्द करते हैं और क्यों? • आप अपने विद्यालय में एक षिक्षक के रूप में किस प्रकार के नेतृत्व का प्रदर्षन करना चाहेंगें?
	इकाई 8	शिक्षा ऐजेंसियों के साथ संबंध	5	2	• अपने क्षेत्र में अन्य महत्वपूर्ण षैक्षिक ऐजेंसियों की भूमिकाओं का पता लगाना।

					• समुदाय के साथ बेहतर संबंध स्थापित करने के लिए अपने साथी अध्यापकों एवं मुख्याध्यापकों की भूमिका परीक्षण करना।
ब्लॉक-3 विद्यालय तथा समुदाय सहभागिता प्रबंधन	**इकाई 9**	सामुदायिक संचालन (अभ्यास आधारित)	5	3	• सामुदायिक गतिषीलता की आवष्यकता क्यों है? • अपने विद्यालय द्वारा सामुदायिक गतिषीलता हेतु किये जाने वाले कार्य क्या हैं?
	इकाई 10	विद्यालय का प्रबंधन	3	2	• आप अपने विद्यालय में किस प्रकार का प्रबंधन पसन्द करते हैं? • अपने विद्यालय प्रणाली में प्रबंधन के घटकों का पता लगाना।
	इकाई 11	विद्यालय तथा समुदाय के संसाधनों का प्रबंधन	3	1	• अपने विद्यालय प्रणाली में आर्थिक संसाधन ऐजेंसियों की भूमिकाओं का पता लगाना।
	इकाई 12	विद्यालय और समुदाय सहभागिता प्रबंधन के उपागम	3	2	• विद्यालय और समुदाय सहभागिता के साथ जुड़े सामाजिक न्याय की सार्थकता। • अपने विद्यालय प्रणाली की लागत लाभ विष्लेषण करना।
		शिक्षण	20	-	
		कुल	66	24	30
कुल योग		**कुल योग**	**66+24+30=120**		

ब्लॉक-3

इकाई 9 : सामुदायिक संचालन (अभ्यास आधारित)

इकाई 10 : विद्यालय का प्रबंधन

इकाई 11 : विद्यालय तथा समुदाय के संसाधनों का प्रबंधन

इकाई 12 : विद्यालय और समुदाय सहभागिता प्रबंधन के उपागम

खंड प्रस्तावना

आप शिक्षार्थी के रूप में ब्लाक-3: विद्यालय तथा समुदाय सहभागिता प्रबंधन का अध्ययन करेंगे। इस खण्ड में विद्यालय प्रबंधन, विद्यालय तथा समुदाय के संसाधनों का प्रबंधन और विद्यालय और समुदाय सहभागिता प्रबन्धन पर आारित तीन इकाईयां हैं। प्रत्येक इकाई कुछ भागों तथा उपभागों में विभाजित है। आप इससे पूर्व खण्ड-1: समाज, समुदाय एवं विद्यालय तथा खण्ड-2: विद्यालय प्रणाली का अध्ययन कर चुके हैं।

इकाई-9 सामुदायिक संचालन (अभ्यास आधारित)

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप सामुदायिक संचालन एवं विद्यालय प्रणाली में इसकी भूमिका को समझ सकेंगे। आप विद्यालय प्रणाली में अहम भूमिका का निर्वहन करने वाली विभिन्न समुदायों की पहचान कर सकेंगे। यह इकाई आपको विद्यालय के सन्दर्भ में कुछ गतिविधियों को तैयार करने हेतु सुझाव देने में सक्षम बनायेगी। आप सार्थक समुदायों को संघटित करने में शिक्षक की भूमिका को समझ सकेंगे। समुदायों को तैयार करने या संघटित करने वाले के रूप में शिक्षक के गुणों तथा कौशलों को सूचीबद्ध कर सकेंगे।

इकाई-10 विद्यालय का प्रबंधन

यह इकाई आपको विद्यालय प्रबंधन के प्रत्यय को परिभाषित करने तथा प्रबंधन की प्रकृति की व्याख्या करने के योग्य बनाएगी। आप प्रबंधन के तत्वों/घटकों का वर्णन करने में सक्षम हो सकेंगे। आप विभिन्न प्रकार के प्रबंधन जैसे सहभागी एवं असहभागी प्रबंधन की सूची बना सकेंगे तथा उनका वर्गीकरण कर सकेंगे। आप सहभागी प्रबंधन की प्रक्रिया की भी व्याख्या कर सकेंगे।

इकाई-11 विद्यालय तथा समुदाय के संसाधनों का प्रबंधन

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप विद्यालय प्रबंधन हेतु विभिन्न प्रकार के संसाधनों जैसे मानव संसाधन, भौतिक संसाधन एं आर्थिक संसाधनों में भेद करने के योग्य हो सकेंगे। आप विद्यालय आप हेतु विभिन्न प्रकार के आर्थिक संसाधनों जैसे सरकार, अन्य अभिकरक, स्थानीय संस्थाएं परीक्षा शुल्क, बचत इत्यादि का वर्गीकरण कर सकेंगे। आप विभिन्न प्रकार के विद्यालय प्रबंधन में विभिन्न प्रकार के आर्थिक संसाधनों के महत्व का तुलनात्मक अध्ययन करने में सक्षम हो सकेंगे। आप संसाधनों के प्रबंधन में समुदाय की भूमिका की व्याख्या करने तथा विद्यालय विकास में संसाधनों को संघटित करने में सक्षम हो सकेंगे।

इकाई-12 : विद्यालय और समुदाय सहभागिता प्रबंधन के उपागम

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात आप विद्यालय समुदाय सहभागिता के प्रबंधन के प्रत्यय की व्याख्या करने के योग्य हो सकेंगे। आप प्रबंधन के उपागम के प्रकारों जैसे — मानव आवश्यकता, कीमत-लाभ विश्लेषण, सामाजिक माँग, सामाजिक न्याय इत्यादि का वर्गीकरण कर सकेंगे। आप विद्यालय एवं समुदाय सहभागिता के संदर्भ में प्रत्येक उपागम की सार्थकता पर चर्चा कर सकेंगे। आप विद्यालय एवं समुदाय के संबंधों को मजबूती प्रदान करने वाली प्रक्रिया की व्याख्या कर सकेंगे।

विषय सूची

टिप्पणी

इकाई-9 सामुदायिक संचालन (अभ्यास आधारित)

संरचना

9.0 प्रस्तावना

9.1 अधिगम उद्‌देश्य

9.2 समुदाय संचालन

9.2.1 अर्थ तथा महत्त्व

9.2.2 समुदाय संचालन क्यों महत्त्वपूर्ण है?

9.2.3 समुदाय संचालन में सम्मिलित कार्य

9.2.4 समुदाय संचालक : भूमिका एवं कौशल

9.3 केस अध्ययन : प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रमों में सम्मिलित सामुदायिक संचालन

9.3.1 सर्वशिक्षा अभियान के अर्न्तगत सामुदायिक सहभागिता तथा संचालन

9.3.2 सामुदायिक संचालन : 'प्रथम' की अति महत्वपूर्ण रणनीति

9.4 शिक्षक और समुदाय संचालन

9.5 सारांश

9.6 प्रगति की जाँच के उत्तर

9.7 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

9.8 अन्त्य इकाई अभ्यास

9.0 प्रस्तावना

'ऐसा बहुत कम होता है कि यदि कोई कार्य या वस्तु बहुत प्यार से अपनाई गई हो और वह सबके लिए मूल्यवान हो, वह विफल या समाप्त हो जाय। 'स्मृति'

ब्लाक 1 और 2 की इकाइयों में आपने समुदाय तथा इसको विद्यालय के साथ जोड़ने की कड़ी की विस्तृत अवधारणा के बारे में सीखा। विद्यालय द्वारा शिक्षा में सामुदायिक सहभागिता का महत्त्व तथा नीतियों द्वारा इसके प्रावधान के विषय में भी आपने सीखा। विद्यालय तंत्र हेतु समुदाय को एक संसाधन के रूप में जानते हुए इस इकाई में सामुदायिक सहभागिता के महत्त्व व उसे अपनाने पर प्रकाश डाला गया है तथा सामुदायिक संचालन के लिए विभिन्न प्रतिविधि यां सुझाई गई हैं। यह इकाई अभ्यास आधारित है। विद्यालय से संबंधित विभिन्न समुदायों के अस्तित्व तथा महत्त्व को समझने हेतु कई उदाहरणों तथा गतिविधियां इस इकाई में प्रस्तुत की गई है। इस इकाई के उदाहरण। केस अध्ययन समुदायों को विद्यालय हेतु एक संसाधन के रूप

टिप्पणी

में प्रस्तुत करते हैं तथा सामुदायिक संचालन के विभिन्न उपाय सुझाते हैं। सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण रूप से इकाई प्रकाशित करती है कि विद्यालय के मुख्य लक्ष्य 'विद्यार्थी अधिगम' को प्राप्त करने हेतु सामुदायिक संचालन तथा इसके लाभों के सहजीकरण में एक शिक्षक की क्या भूमिका है।

यह इकाई एक क्रियात्मक अनुसंधान आधारित परियोजना कार्य से जोड़ी गई है जिसे आप अपने विद्यालय-स्थिति हेतु प्रयोग में ला सकते है।

9.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई के पूर्ण हो जाने के बाद आप इस योग्य हो जाएंगे कि–

- समुदाय का स्वामित्व तथा विद्यालय तंत्र में इसकी सहभागिता की अवधारणा को समझ जाएंगे।
- विभिन्न समुदायों, जो विद्यालय तंत्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं, उनको पहचान लेंगे।
- सामुदायिक संचालन तथा संचालित सामुदायिक संसाधनों का विद्यालय हेतु उपयोग के उदाहरण दे पाएंगे।
- अपने विद्यालय के संदर्भ में सामुदायिक संचालन की कुछ गतिविधियां सुझाएंगे।
- प्रासंगिक समुदायों के संचालन में एक शिक्षक (स्वयं) की भूमिका पहचान लेंगे।
- एक समुदाय संचालक/सहजकर्ता के रूप में शिक्षक के गुणों तथा कौशलों को सूचीबद्ध कर लेंगे।

9.2 समुदाय संचालन

9.2.1 अर्थ तथा महत्त्व

आइए हम निम्नलिखित दृश्य जो दो विद्यालयों की कहानी बताता है, के द्वारा सामुदायिक संचालन तथा स्वामित्व की अवधारणा तथा महत्त्व को समझते है।

दृश्य-1 : 'दो विद्यालयों की कहानी'

''मैं एक प्राथमिक शिक्षक हूं। आज मुझे अपने विद्यालय में कार्यभार ग्रहण करने जाना है, जहां निदेशालय ने मुझे नियुक्ति दी है। मैं यहां नयी हूं, इसलिए मैं लोगों से विद्यालय पहुंचने के लिए दिशा पूछ रही हूँ।

टिप्पणी

केस-1 : मैंने वहां बैठे हुए लोगों से प्राथमिक विद्यालय के बारे में पूछा। उन्होंने मुझे अनजान रूप से देखा। बहुत प्रयास के बाद अंतत: मैं जिस विद्यालय को ढूंढ रही थी, वहां पहुंची।

केस-2 : मैंने वहां बैठे हुए लोगों से प्राथमिक विद्यालय के बारे में पूछा। उनमें से एक व्यक्ति पास के दूसरे व्यक्ति को बुलाता है और कहता है ''क्या तुम जानते हो वह विद्यालय कहां पर है, जहां आपके पड़ोसी की बेटी नामांकित है?'' दूसरा व्यक्ति उत्तर देता है ''हां मैं आपको वहां ले जा सकता हूं क्योंकि कल मैंने उस बच्ची को स्कूल में छोड़ा था क्योंकि उसके पिता नहीं जा पाए थे। इस व्यक्ति ने मुझे विद्यालय का रास्ता बताया। जब मैं विद्यालय जा रही थी तो विद्यालय की स्थिति के बारे में लगातार पूछताछ कर रही थी

ताकि यह सुनिश्चित हो जाय कि मैं सही दिशा में जा रही हूं। जो लोग विद्यालय के बहुत नजदीक रह रहे थे, उनसे विद्यालय का स्थान पूछने पर उन्होंने कहा–''ओह! हमारा विद्यालय जहां हमारे बच्चे पढ़ते है! वह तो इस सड़के के नीचे है।'' मैंने उन्हें धन्यवाद दिया औरअपनी मंजिल तक पहुंच गई। उपरोक्त दृश्य में निम्न बिंदु नोट करें–

पहले केस में-लोगों को विद्यालय के बारे में कोई जानकारी नहीं थी या वे विद्यालय के बारे में जानने के लिए इच्छुक नहीं थे और इसीलिए शिक्षिका के मार्ग-दर्शन में भी संलग्न नहीं थे।

- किसी ने भी शिक्षिका की मदद करने के लिए किसी और व्यक्ति से कहने का प्रयास नहीं किया। या लोग इस काम के लिए एक दूसरे से राय लेने के इच्छुक नहीं थे।

दूसरे केस में-2–लोगों ने विद्यालय को 'अपना विद्यालय' कहा। उन्होंने विद्यालय को इस रूप में भी पहचाना जैसे कि उनके अपने बच्चे उस विद्यालय में पढ़े थे।

- लोग इस कार्य को करने के लिए एक दूसरे से जुड़े थे। (इस केस में शिक्षिका को दिशा दिखाने में)। ऐसा लगता है कि वहां सहायता ओर सहयोग की भावना थी क्योंकि आवश्यकता पड़ने पर पड़ोसी के बच्चे को विद्यालय में पहुंचाया गया।

आपने ऊपर जो पढ़ा, उसके आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. आप क्या सोचते है? कौन सा दृश्य समुदाय का ऐसा चित्रण करता है जहां लोग एक दूसरे के साथ सहयोग करते हैं।

2. आप क्या सोचते है कि कौन सा दृश्या ऐसा समुदाय प्रस्तुत करता है जहां लोग संसाध नों के स्वामित्व तथा उनके प्रबंधन को प्रदर्शित करने हेतु साथ मिलकर चलते है?

यह नोट करें कि समुदाय में सबसे मूल्यवान संसाधन वहां के व्यक्ति है। आत्म-पर्याप्तता तथा आत्मनिर्भरता के विकास में समुदाय के लोगों को आपसी सहयोग महत्त्वपूर्ण है।

टिप्पणी

उपलब्ध संसाधनों की पहचान कर उनका उपयोग करने तथा तदनुसार योजना बनाने में समुदाय की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। जहां पर स्थानीय स्व-शासन का तंत्र है, वहां पर अधिकांश निर्णय स्थानीय लोगों द्वारा स्थानीय स्तर पर ही लिए जाते हैं। समुदाय के विकास हेतु यह सर्वोत्तम उपाय है। जहां लोग स्वयं योजना बनाते है और लागू करते हैं, इसी को सामुदायिक संचालन कहते है। वे अपने समुदाय व लोगों को परिवर्तित करने की जिम्मेदारी ले लेते हैं।

इस प्रकार सामुदायिक संचालन एक क्षमता निर्माण की प्रक्रिया है जिसके द्वारा लोग, समूह या संस्थाएं अपने विकास हेतु गति विधियों की योजना बनाना, लागू करना, उनका मूल्यांकान करने का कार्य निरन्तर तथा सहभागिता के आधार पर करते हैं। यह कार्य वे या तो स्वयं या दूसरों से अभिप्रेरित होकर करते हैं।

9.2.2. सामुदायिक संचालन क्यों महत्त्वपूर्ण है?

सामुदायिक संचालन किसी भी कार्यक्रम की सफलता हेतु बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह सहायक है–

- इन्टरवेशन की मांग करने में।
- इन्टरवेशनस की सामर्थ्य तथा प्रभाविकता को बढ़ाने में।
- कार्य हेतु अतिरिक्त संसाधनों के योगदान में।
- सर्वाधिक कठिन/मुश्किलों तक पहुंचने
- शिक्षा को प्रभावित करने वाले मुद्दों को संबोधित करने में : लिंग भेद, जागरूकता की कमी।
- सामुदायिक स्वामित्व तथा उसकी निरन्तरता को बढ़ाने में।

9.2.3 : सामुदायिक संचालन में सम्मिलित कार्य

अभी तक आप सामुदायिक संचालन की अवधारणा, अर्थ तथा महत्त्व को कुछ हद तक समझ गए है। अब हम सामुदायिक संचालन की प्रक्रिया के अंतर्गत आने वाले कार्यों को समझते है।

परिदृश्य 2 : एक सम्बन्धित शिक्षक

कक्षा V में एक शिक्षिका गणित की परीक्षा लेती है। परिणाम से पता चलता है कि आधी कक्षा ने परीक्षा पास नहीं की। जिन विद्यार्थियों ने परीक्षा पास की थी, उनमें से अधिकांश सीमा रेखा के वर्ग में ही थे। शिक्षिका बहुत परेशान थी। वह इस बात के लिए दृढ़ निश्चयी थी कि बच्चे सीखें। वह प्रत्येक बच्चे के

निष्पादन पर व्यक्तिगत रूप से चर्चा करना चाहती थी, विशेषकर उन बच्चों पर जो अच्छे अंक नहीं प्राप्त कर पाए (इस केस में लगभग पूरी कक्षा)। परन्तु इसमें बहुत समय लगता जो कि संभव नहीं हो पाता क्योंकि एक हफ्ते का प्रदत्त पाठ्यक्रम पूरा करना था। इसलिए शिक्षिका ने कक्षा में उद्घोषणा की ''मैं चाहती हूं कि आप में से हर एक यह लिखे कि उसने परीक्षा में कैसा कार्य किया?'' अच्छा, औसत, खराब, बहुत खराब। अपने निष्पादन की रेटिंग लिखें और उसका कारण लिखें कि आपका ऐसा निष्पादन क्यों रहा। यद्यपि यह कार्य शिक्षिका के लिए अतिरिक्त कार्य था परन्तु उसने किसी प्रकार इसको संपन्न कर लिया। बच्चों ने कारण बताए। जैसे : रिश्तेदार की शादी में संलग्न रहना, खराब स्वास्थ्य, विषय की कठिनता, कक्षा में अनुपस्थिति आदि। शिक्षिका ने व्यक्तिगत रूप से छोटे समूहों में इस मद की चर्चा की जहां उसे महसूस हुआ कि बच्चों ने सही कारण नहीं लिखे हैं या कोई कारण नहीं लिखे। उसने इन बच्चों की चर्चा पूरी कक्षा में की। बच्चे प्राय: अपने सहपाठियों के बारे में सूचना देने के प्रासंगिक श्रोत होते हैं। कुछ बहुत खराब निष्पादन वाले बच्चों के बारे में शिक्षिका ने अपने साथी शिक्षकों के साथ चर्चा की।

उसके पश्चात शिक्षिका ने बच्चों के अभिभावकों से इसकी चर्चा की, जब भी वह किसी अवसर पर उनसे मिलती। कक्षा में उसने अध्ययन समूह बनाए जिसमें अच्छे व खराब निष्पादन वाले बच्चों को मिलाकर रखा ताकि सहपाठी अधिगम सुनिश्चित हो सके। क्योंकि अधिकांश बच्चे प्रथम पढ़ी के शिक्षार्थी थे, इसलिए शिक्षिका ने उनकी सहायता हेतु कुछ वरिष्ठ छात्रों को, जो खराब न्पिादन वाले बच्चों के घर के निकट रहते थे, उन्हें ढूंढा। पुन: अगली परीक्षा का दिन आया। आप क्या सोचते हैं? इस परीक्षा में कक्षा का निष्पादन कैसा रहा होगा? वहां एक संभावना है कि कुछ बच्चों के निष्पादन में सुधार हुआ होगा।

शिक्षिका के निरन्तर प्रयासों तथा योजनाबद्ध तरीकों से बच्चों के बेहतर निष्पादन की सम्भावना कहीं अधिक है। शिक्षिका इस कार्य को अपनी सभी कक्षाओं के लिए नहीं कर पाई। उसने अपनी प्रविधि की चर्चा अपने साथी शिक्षकों के साथ की। उनमें से कुछ ने शिक्षिका को प्रोत्साहित किया और अपनी कक्षा में भी उस विधि को लागू किया। बाद में पूरे स्टाफ ने प्राचार्य के साथ इस संबंध में एक गोष्ठी की और विद्यालय में 'सर्वात्तम अध्ययन समूह' (बडीज) का

टिप्पणी

तंत्र शुरू हो गया: सर्वोत्तम अध्यायी तथा सहयोगी वरिष्ठ समूह, सर्वाधिक सहयोगी व सम्मानित अभिभावक। प्रत्येक सप्ताह प्रात:कालीन सभा में इन समूहों के लिए करतल ध्वनि (क्लौपिंग) करवाई जाती। यह प्रत्येक कक्षा के लिए किया गया।

उपर्युक्त दृश्य में हमने देखा कि कुछ मात्रा में सामुदायिक संचालन हुआ जिससे परीक्षा में विद्यार्थियों के निष्पादन में सुधार का लक्ष्य प्राप्त हुआ।

अब हम सामुदायिक संचालन में संलग्न मुख्य कार्यों का अवलोकन करते हैं और उन्हें उपरोक्त दृश्य के संदर्भ में समझते है:

सामुदायिक संचालन में सम्मिलित प्रमुख कार्य	उपर्युक्त दृश्य में शिक्षक द्वारा संपादित गतिविधियां
अपने समुदाय तथा उसके तात्कालिक मुद्दों को पहचानना	उपर्युक्त दृश्य में शिक्षिका ने मुद्दे की पहचान की–विद्यार्थियों का 'गणित' परीक्षा में खराब निष्पादन। शिक्षिका ने विभिन्न समुदायों को पहचान कर उन्हें संचालित किया: **विद्यार्थी:** (कक्षा में विभिन्न निष्पादन स्तरों के विद्यार्थी, वरिष्ठ विद्यार्थी। **शिक्षक :** सह-कार्यकर्ता तथा वरिष्ठ शिक्षक। **अभिभावक** **पर्यवेक्षक**-प्राचार्य
समुदाय में उपलब्ध संसाधनों की पहचान	उपर्युक्त दृश्य में शिक्षक ने निम्नलिखित संसाधनों की पहचान की: **विद्यार्थी :** ● बेहतर निष्पादन वाले बच्चों को सहपाठी अधिगम हेतु चुना गया। ● सहपाठी विद्यार्थियों को खराब निष्पादन वाले विद्यार्थियों की पृष्ठ-भूमि की जानकारी एकत्रित करने के लिए एक संसाधन के रूप में देखा गया। ● विद्यालय के निश्चित क्षेत्र में रहने वाले विद्यार्थियों को घर पर सहायता हेतु संसाधन रूप में लिया गया।

टिप्पणी

	शिक्षक : ● वरिष्ठ शिक्षकों की पहचान नियोजित प्रविधियों की चर्चा करने में संसाधन के रूप में की गई। ● अन्य विषयों के शिक्षकों की पहचान उनके विषय में कमजोर विद्यार्थियों के निष्पादन पर फीड बैक तथा उनकी पृष्ठ भूमि के बारे में जानकारी प्रदान करने हेतु की गई। **अभिभावक** सक्रिय अभिभावकों को आदर्श अभिभावकों के रूप में प्रस्तुत किया गया और जहां तक संभव हो उन्हें प्रथम पीढ़ी के शिक्षार्थी जिनका खराब निष्पादन है और घर में उन्हें कोई शैक्षिक तथा वातावरण में सहायता प्राप्त नहीं है। **पर्यवेक्षक-प्राचार्य** प्राचार्य को एक ऐसे आदर्श के रूप में पहचाना गया जो 'अच्छे कार्यकर्ताओं' को प्रोत्साहित करने तथा उनके प्रति आभार प्रकट करने का कार्य करे। इसने अन्य लोगों के लिए अभिप्रेरणा का कार्य किया।
समुदाय सदस्यों के बीच निरन्तर वार्तालाप विकसित करना जिससे समुदाय-संगठनों (कमेटी आदि) को मजबूत किया जा सके।	विभिन्न अवसरों पर विद्यार्थी, शिक्षकों तथा अभिभावकों के साथ लगातार वार्तालाप सुनिश्चित किया गया। अध्ययन समूहों का निर्माण, निकट क्षेत्र में रहने वाले वरिष्ठ विद्यार्थियों को इसकी जिम्मेदारी देना, इस प्रविधि का अन्य विषयों में उपयोग कुछ आदर्शों का निर्माण कार्य किया यहाँ ऐसी संरचनाओं को प्रोत्साहित किया गया और उनके निष्पादन को मान्यता देने से एक शक्तिशाली वातावरण का निर्माण करने में सहायता मिली।
एक ऐसे वातावरण का निर्माण करना जिसमें व्यक्ति स्वयं की तथा अपने समुदाय की आवश्यकताओं को समझने में स्वयं को सशक्त बना सके।	शिक्षिका की वह प्रविधि जब उसनमें विद्यार्थियों को स्वयं के निष्पादन को नियत (रेट) करने के लिए कहा और उसके कारणों को बताने को कहा—विद्यार्थियों को अपनी आवश्यकताओं को समझने में सशक्त तथा संवेदनशील बनाने की विधि समझी जा सकती है।
सामुदायिक सहभागिता को बढ़ावा देना	सामुदायिक-संसाधनों की पहचान तथा विभिन्न समुदाय सदस्यों को शामिल करके इन संसाधनों के उपयोग हेतु प्रविधि की चर्चा करना, सामुदायिक प्रतिभागिता तथा स्वामित्व को सुनिश्चित करता है।

टिप्पणी

समुदाय सदस्यों की सहभागिता के साथ कार्य करना	मुद्दे को समझने के लिए तथा उसको संबोधित करने हेतु उपाय ढूंढने में विद्यार्थी समूह तथा शिक्षकों के साथ चर्चा करने से एक आदर्श (माडल) के निर्माण में सहायता मिली। प्रत्येक व्यक्ति से यह सहायता मिली। समुदाय के साथ यह सहभागिता सफलता का कारण हो सकती है।
विभिन्न प्रकार की प्रविधियों एवं उपागमों के विकास में रचनात्मक एवं प्रबल समुदायों की पहचान तथा उनकी सहायता करना	'सर्वोत्तम **'अध्ययन समूह'**, **'सहायक वरिष्ठ'** तथा **'अभिभावकों'** को पहचान प्रदान करने की प्रणाली ने रचनात्मक टीम को प्रोत्साहन प्रदान किया और विद्यार्थियों शैक्षिक सहायता हेतु अधिक नवाचारी उपाय करने के लिए अभिप्रेरित किया।
समुदायों को वाह्य संसाधनों के साथ जोड़ने में सहायता करना	प्रचलित विद्यालय प्रणाली में एक शिक्षक के रूप में जो प्रयास किए गए उससे अभिभावक विद्यालय के बाहर विद्यार्थियों से जुड़ गए (सक्षम अभिभावकों द्वारा पड़ोसी बच्चों की मदद करने की प्रणाली)। इसे इस रूप में समझा जा सकता है कि विद्यार्थी समुदाय (विद्यालय के अन्दर) को अभिभावकों के साथ जोड़ना (विद्यालय परिधि के बाहर)। यह वाह्य संभव संबंधों की यह एक सूक्ष्म चित्रण हे। इस इकाई के आगे के अनुभागों में आप इस प्रकार के संबंधों को वास्तविक केस अध्ययनों में पाएंगे जिनमें सामुदायिक संचालन सम्मिलित है।
समुदायों या उस सहभागी जो आपके साथ काम करता है उनके लिए साथ काम करने हेतु प्रर्याप्त समय समर्पित करना	एक शिक्षक के पास विद्यालय में कई जिम्मेदारियां होती हैं, उसके लिए समय का संसाधान बहुत कम मात्रा में उपलब्ध होता है। उपर्युक्त दृश्य में हमारे शिक्षक ने फिर भी समायोजन करके संबंध व्यक्तियों को समय देने का प्रयास किया। करके संबद्ध व्यक्तियों को समय देने का प्रयास किया। एक समुदाय संचालन जिसका प्रमुख केंद्र संचलित करना है निश्चित रूप से अधिक समय व्यय कर सकता है।
सभी संबद्ध व्यक्तियों (स्टेक होल्डरस) को सम्मिलित करना	एक सामान्य लक्ष्य की प्राप्ति हेतु सामुदायिक संसाधनों के संचालन में किसी भी समुदाय की सहभागिता के लिए यह बहुत महत्त्वपूर्ण है। ऊपर दिए गए दृश्य में, सभी संबद्ध व्यक्तियों (विद्यार्थी, शिक्षक, सहकर्मी तथा वरिष्ठ, श्रेष्ठ तथा अभिभावक) को एक संसाधन के रूप में पहचाना गया और निरन्तर उन्हें प्रक्रिया में संलग्न रखा गया।

टिप्पणी

नोट : दृश्य-2 में **'एक संबद्ध शिक्षक'** ऊपर दिखाया गया है। तथा सामुदायिक संचालन के कार्यों पर चर्चा, एक शिक्षक के सीमित परन्तु प्रासंगिक संदर्भ और उसके नकटतम वातावरण के साथ की गई है। बाद में दिए गए इस इकाई के अन्य अनुभागों में वास्तविक केस अध्ययन दिए गए हैं, जहां आपको इन कार्यों को विस्तृत परिवेक्ष्य में पहचानने का अवसर मिलेगा। अब आपने विभिन्न सामुदायिक संचालन संबंधी कार्यों को ऊपर दिए गए दृश्य के संदर्भ में पढ़ लिया है। चिंतन करें और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें :

अपनी प्रगति जांचें–1

1. आपकी राय में बच्चों के परिणामों में क्या होता यदि यह प्रविधि (जैसा ऊपर वर्णन किया गया है) आपके विद्यालय में क्रियान्वित होती?

   ....

   ....

   ....

2. यदि शिक्षिका ऐसा प्रयास नहीं करती तो क्या होता? आप क्या सोचते हैं?

   ....

   ....

   ....

3. आप क्या सोचते हैं कि यह एक शिक्षक के लिए बुद्धिमता होती या संभव हो पाता कि वह प्रत्येक विद्यार्थी पर व्यक्तिगत ध्यान देने विद्यार्थियों के परिणामों में सुधार की एकमात्र प्रतिधि को बिना शिक्षक, अभिभावक तथा विद्यार्थियों को सम्मिलित किए करवाता?

   ....

   ....

   ....

9.2.4 समुदाय संचालक : भूमिका और कौशल

उपर्युक्त अनुभागों में हमने सामुदायिक संचालन की प्रक्रिया तथा उसमें संलग्न कार्यों को समझा। अब हम स्वयं को समुदाय संचालक की भूमिका तथा उसमें संलग्न कौशलों से परिचित करते हैं।

टिप्पणी

एक संचालक वह व्यक्ति है जो संचालन करनता है अर्थात् चीजों को सक्रिय बनाता है। वह समुदाय के लिए महत्त्वपूर्ण सामान्य लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु वातावरण बनाने में निम्न रूप से एक उत्प्रेरक का कार्य करता है–

- व्यक्तियों को साथ मिलाकर
- आपसी विश्वास स्थापित करके
- सहभागिता को बढ़ावा देकर
- चर्चा एवं निर्णय लेने में सहजकर्ता के रूप में
- सरलता से कार्यों के होने में सहायता करके
- सामुदायिक संचालन की प्रक्रिया में सहजीकरण

चित्र : 1 सामुदायिक संचालक के लिए आवश्यक, दृष्टिकोण, कौशल तथा ज्ञान को संक्षिप्त रूप में प्रदर्शित करता है।

दृष्टिकोण	:	• एक स्थिति को जांचने की स्वेच्छा • सभी समुदाय सदस्यों के प्रति सम्मान • अनिर्णयान्तम तथा उपागम को स्वीकारना • सामुदायिक भिन्नता की समझ • प्रभावी कार्य हेतू समुदाय की क्षमता पर विश्वास
कौशल	:	• अच्छे संप्रेक्षण कौशल विशेषकर सुनना • स्वविषलेशण तथा समस्या-समाधान में समुदाय को सक्षम बनाने हेतू अच्छे सहजीकरण कौशल • निर्णय लेने तथा योजना बनाने में समुदाय के प्रत्येक व्यक्ति की सहभागिता सुनिश्चित करना।
ज्ञान	:	• सामुदायिक संचालन की प्रक्रिया तथा उसके सिद्यांतों का पूर्णज्ञान • समुदाय की समझ : नैतिक मूल्य तथा संवेदनाएं।

दृष्टिकोण :

- एक स्थिति को जांचने की स्वेच्छा
- सभी समुदाय सदस्यों के प्रति सम्मान
- अनिर्णयात्मक तथा उपागम को स्वीकारना
- सामुदायिक भिन्नता की समझ
- प्रभावी कार्य करने हेतु समुदाय की क्षमता पर विश्वास

कौशल

- अच्छे संप्रेषण, विशेषकर सुनना
- स्व विश्वलेषण तथा समस्या-समाधान में समुदाय को सक्षम बनाने हेतु सहजीकरण-कौशल

टिप्पणी

- निर्णय लेने तथा योजना बनाने में समुदाय के प्रत्येक व्यक्ति की सहभागिता सुनिश्चित करना

ज्ञान :

- सामुदायिक संचालन की प्रक्रिया तथा उसके सिद्धांतों का पूर्ण ज्ञान
- समुदाय की समझ : इसकी नैतिकता और संवेदनशीलता

इस प्रकार सामुदायिक संचालक एक ऐसा व्यक्ति है जो सामुदायिक प्रतिभागिता सुनिश्चित करता है और यह सुनिश्चित करता है कि सामान्य लक्ष्य की प्राप्ति हेतु संसाधनों का संचालन हो रहा है। अब हमने समझ लिया है कि एक सामुदायिक संचालक को मुख्यत: क्या करना है और एक मजबूत समुदाय संचालक के क्या गुण होने चाहिए। आइए अब हम संप्रेषण प्रक्रिया और अच्छे संप्रेषण कौशलों के बारे में पढ़ते है जैसा कि बॉक्स 1 में दिया गया है–

बॉक्स-1 : एक समुदाय संचालक के लिए आवश्यक संप्रेषण कौशल

संप्रेषण क्या है?

- विचारों, सिद्धांतों, सलाहों, सूचनाओं तथा समझ का आदान-प्रदान संप्रेषण है।
- जब भेजा गया संदेश प्राप्तकर्ता द्वारा उसी भाव से समझा जाता है जिस भाव से भेजने वाला चाहता है तो प्रभावी संप्रेषण सम्पन्न होता है।

संप्रेषण प्रक्रिया :

संप्रेषण प्रक्रिया तभी पूर्ण होती है जब भेजा गया संदेश प्राप्तकर्ता द्वारा ठीक प्रकार से समझा जाय तथा प्राप्तकर्ता संदेश भेजने वाले को पृष्ठ-पोषण (फीड-बैक) के साथ प्रत्युत्तर दे।

संप्रेषण प्रक्रिया के निम्न तत्त्व हैं :

भेजने वाला, प्राप्तकर्ता, संदेश, मार्ग और माध्यम, पृष्ठ पोषण तथा शोर

अ. संप्रेषण प्रक्रिया **संदेश वाहक** (सैन्डर) के साथ प्रारम्भ होती है। संदेश वाहक एक व्यक्ति है जो प्राप्तकर्ता के पास एक संदेश भेजना चाहता है। संदेश भेजने से पूर्व संदेश वाहक को प्राप्तकर्ता की दृष्टि से संप्रेषण को दृष्टित करना चाहिए।

ब. प्राप्तकर्ता : एक व्यक्ति या समूह है जिसके लिए संप्रेषण किया जाना है।

स. मार्ग : संदेश भेजने का साधन है।

द. पृष्ट-पोषण (फीड-बैक): प्राप्तकर्ता का संदेश प्राप्त करने के बाद दिया गया उत्तर है।

ई. शोर (नोइस) किसी भी प्रकार की बाधा जो संदेश की स्पष्टता या गुणवत्ता को कम करता है। शोर भौतिक हो सकता है (उदाहरण के लिए निर्माण कार्य से आने वाला

टिप्पणी

शोर), मनोवैज्ञानिक (जब सुनने वाले का ध्यान भटक जाता है और बोलने वाले ने क्या कहा या लिखा, वह उस पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पाता), जैवकीय (जब वक्ता की किसी शारीरिक कठिनाई के कारण प्रभावी संप्रेषण नहीं हो पाता) या सिमेन्टिक (जब वक्ता ऐसे शब्दों का प्रयोग करता है जो प्राप्तकर्ता नहीं समझ सकता) हो सकता है।

संप्रेषण में सुनने का महत्त्व :

- सक्रिय सुनना का अर्थ है : वक्ता के विचारों, भावनाओं तथा आवश्यकताओं को समझने के लक्ष्य से सुनना।
- हमारे जीवन में अधिगम का अधिकांश भाग हमारे सुनने की कला पर निर्भर करता है।
- सुनना हमें एक दूसरे के विचारों को समझने में मदद करता है।
- कई बार व्यक्ति को वैकल्पिक विचारों/सुझावों को समझने की इच्छा से पूर्व मात्र सुनने तथा उनके प्रति आभार प्रकट करने की आवश्यकता होती है।
- यदि हम सक्रिय रूप से किसी व्यक्ति के विचारों/सुझावों को सुनते है और बाद में अपने सुझाव/विचार प्रस्तुत करते है तो वह व्यक्ति उन्हें स्वीकार करने में अधिक रुचि लेता है।

पिछले अनुभाग में आप समुदाय संचालक के प्रमुख गुणों से परिचित हुए। इन गुणों के बारे में आपने जो कुछ भी सीखा उसके आधार पर ''हमारे शिक्षक'' में तथा दृश्य-2 में 'एक संबद्ध शिक्षक' में इनमें से कुछ गुणों की पहचान कर सकते हैं? अब आप उन गुणों के बारे में सोचिए जो आपको संचालन में योग्य बना सकते हैं।

दृश्य-2 में शिक्षक के गुण	**आपके गुण जो आपको एक संचालक बना सकते हैं।**
•	• ....
•	• ....
•	• ....
•	• ....

9.3 केस अध्ययन : प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रमों में सामुदायिक संचालन

अभी तक इस इकाई में हमने सामुदायिक संरचालन-संबंधी अवधारणाओं को समझा, विशेषकर एक विद्यालय या एक कक्षा जो सीधे एक शिक्षक (आप) से जुड़े हुए है। अब हम कुछ सामुदायिक संचालन के सफल कार्यक्रमों का अध्ययन करते है जिनका शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक प्रभाव रहा है।

9.3.1 सर्व-शिक्षा अभियान के अंतर्गत सामुदायिक प्रतिभागिता तथा सामुदायिक संचालन

सर्व शिक्षा अभियान (एसएसए) भारत सरकार का राष्ट्रीय कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य 6 से 14 वर्ष के सभी बच्चों को उपयोगी तथा प्रासंगिक प्रारम्भिक शिक्षा प्रदान करना है। यह कार्यक्रम व्यवस्थित सामुदायिक संचालन तथा निर्णय लेने की विकेंद्रित प्रक्रिया का एक प्रभावी तंत्र बनाने को सर्वाधिक महत्त्व देता है। संविधान (73वां तथा 74वां संबंधित संशोधन) का अधिनियम 1992, को दृष्टिगत करके राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.पी.ई.) तथा शिक्षा का विकेंद्रीकृत प्रबंधन कमेटी की सिफारिशों के आधार पर ग्राम शिक्षा समिति (वीईसी), जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (डी.पी.ई.पी.) के अंतर्गत गठित की गई। यह प्रक्रिया एस.एस.ए. द्वारा पुर्नबलित की गई, क्योंकि विद्यालय संबंधी सभी व्यय हेतु फंड समुदायिक संस्थाओं के माध्यम से वितरित किया जाता है जो वास्तव में एस.एस.ए. फंड का 50% से अधिक है।

एस.एस.ए. के अंतर्गत लगभग सभी राज्यों और केंद्र-शासित प्रदेशों में समुदाय स्तर पर संरचनाएं हैं जो विभिन्न राज्यों में आकार, समयावधि तथा प्रक्रिया के आधार पर भिन्न है। विशेष मुद्दे जैसे–नामांकन, विद्यालय में धारण, लड़कियों तथा अन्य अपवंचित समूहों की शिक्षा, विभिन्न ग्रान्ट्स का उपयोग व निर्माण कार्य आदि का समुदाय आधारित मानीटरिंग महत्त्वपूर्ण है और इससे कार्यक्रम के उद्देश्यों की प्राप्ति को सुनिश्चित करने में सहायता मिलती है। समुदाय-स्तर की ये संरचनाएं सूक्ष्म नियोजन में प्रमुख भूमिका निभाती हैं। विशेषकर ग्राम/वार्ड स्तरीय शैक्षिक योजना तथा विद्यालय विकास योजना के विकास में। सर्वशिक्षा, अभियान के अंतर्गत इन समुदायों की प्रतिभागिता द्वारा वार्षिक कार्य-योजना एवं बजट बनाने की प्रक्रिया संपन्न की जाती है। इसमें वे स्थानीय आवश्यकताओं व विशिष्ठताओं को ध्यान में रखते हैं।

विभिन्न राज्यों में कई सामुदायिक संचालन गतिविधियों की पहल सर्वशिक्षा अभियान के अन्तर्गत की है। उनमें से कुछ की सूची निम्नवत है:

- **मदर सम्मेलन :** मीना वीक (मीना सप्ताह) तथा अर्न्तराष्ट्रीय महिला दिवस-विद्यालय, क्लस्टर, ब्लाक, जिला एवं राज्य स्तर पर लड़कियों को बढ़ावा देने के लिए–हिमाचल प्रदेश।
- **हाट-बाजार :** गुजरात के जन-जातीय क्षेत्रों में महिलाओं और बच्चों के लिए सरकारी योजना की जागरूकता अभियान।
- **साक्षरता अभियान :** साक्षर माताओं के लिए - गुजरात
- **विशेष नामांकन ड्राइव व जाति महासभा** - जनजातीय क्षेत्रों में –उड़ीसा
- **विद्यालय से बाहर वाले बच्चों के लिए नामांकन ड्राइव** –पश्चिम बंगाल
- **मुख्यमंत्री शिक्षा संबल महा अभियान**– शिक्षा प्रणाली में शैक्षिक और इन्फ्रास्ट्रकचर-स्थिति में सुधार हेतु अभियान –राजस्थान

- **बाल-मेला–** हिमाचल प्रदेश, उत्तरांचल, राजस्थान, बिहार, झारखंड, आसाम, दिल्ली
- **मां-बेटी मेला–**उत्तरांचल, मध्य प्रदेश, गुजरात
- **पपेट शो–** केरल, पश्चिम बंगाल
- **कला जत्था–** उत्तरांचल, राजस्थान, बिहार, मनिपुर
- **स्ट्रीट प्ले–** केरल, बिहार, पश्चिम बंगाल, दिल्ली
- **स्कूल चलो अभियान–** उत्तरांचल
- मेला
- सर्वशिक्षा अभियान की जागरूकता– हरियाणा
- प्रवेश उत्सव मेला– मध्य प्रदेश
- होली मेला– गुजरात
- स्कूल मेला– केरल

क्रियाकलाप-1

क्या अन्य कोई एस.एस.ए. सामुदायिक संचालन गतिविधियां आपके या अन्य राज्यों में चल रही है, जिन्हें आप जानते हैं। यदि हां तो यहां उन्हें सूची बद्ध कीजिए :

....

....

....

9.3.2 सामुदायिक संचालन–'प्रथम' की अति महत्त्वपूर्ण रणनीति

प्रथम का उद्देश्य 'प्रत्येक बच्चा विद्यालय में हो और सीखे' है। यह भारत की सबसे बड़ी अशासकीय संस्था है जो अपवंचित बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने हेतु कार्य करती है। सन् 1994 में इसकी स्थापना मुंबई शहर के क्षेत्र में रहने वाले बच्चों की शिक्षा प्रदान करने के लिए हुई। तब से यह संस्था का महत्त्व तथा भौगोलिक दायरे दोनों में प्रगति करती गई और देश के 34 मिलियन से अधिक बच्चों तक पहुंच गई। समुदाय तक पहुंचने के लिए नवाचारी संचालन प्रविधियों द्वारा सामुदायिक प्रतिभागिता इस संस्था को मुख्य आधार है। इस संस्था ने मुंबई शहर के स्लम क्षेत्र में प्री-स्कूल कार्यक्रम से अपना कार्य प्रारंभ किया, जहां सीमित संसाधनों जैसे–स्थान की कमी जैसी चुनौती को सामुदायिक प्रतिभागिता के अवसरों में बदला गया, इस कार्य में समुदाय से स्थान देने को कहा गया। प्री स्कूल के बाद संस्था ने विद्यालयों में

टिप्पणी

उपचारात्मक अधिगम कार्यक्रम विकसित, करने, विद्यालय से बाहर रहने वाले बच्चों को मुख्य धारा से जोड़ने लिए ब्रिज कार्यक्रम और शिक्षण की एक सरल विधि कम समय में पढ़ना कैसे सीखें? पढ़ने के लिए सीखना। पढ़ने के लिए सीखना जाँच का एक उपकरण बन गया। जिसके आधार पर देश भर में सर्वेक्षण किया गया और 'शिक्षा की वार्षिक स्थिति' प्रतिवेदन तैयार किया गया जो स्वयं में एक नवाचार था। 16000 से अधिक गांवों, 320,000 परिवारों और लगभग 700,000 बच्चों का आकलन, सन् 2005 से प्रत्येक वर्ष में करना संभव हो पाया क्योंकि देशभर के दूर-दराज क्षेत्रों से भारी संख्या में स्वयं सेवी को संचालित करने संस्था की योग्यता थी। प्रथम का रीड इंडिया अभियान ने पूरे देश में 350,000 से अधिक गांवों में 'सीखने की कमी तथा इसके लिए क्या किया जा सकता है के मुद्दे को लेकर कार्य किया। प्रथम द्वारा विभिन्न परियोजनाओं में ली गई कुछ प्रमुख सामुदायिक संचालन की गतिविधियां निम्नलिखित हैं :

- **मैपिंग**–इसके अंतर्गत कार्यक्रम क्षेत्र का भ्रमण, उस क्षेत्र में उपलब्ध सुविधाओं की जानकारी हेतु वहां के निवासियों के साथ विचार-विमर्श, समुदाय का प्रोफाइल तथा अन्य जानकारी शामिल है।

- कार्यक्रम के उद्देश्य को स्पष्ट करने प्रधान के लिए महत्त्वपूर्ण सदस्यों, ग्राम शिक्षा समिति/विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्यों के साथ गोष्ठी।

- छोटे तथा बड़े समूहों के साथ गोष्ठी–इन गोष्ठियों का मुख्य उद्देश्य समुदाय के साथ प्रथम कार्यक्रम का परिचय देना तथा समुदाय को प्राथमिक शिक्षा और बच्चों के अधिगम स्तरों के प्रति संवेदनशील बनाना है। इसमें सामान्यतः निम्नलिखित गतिविधियां शामिल हैं :

    अ. पूर्वा/टोला/मोहल्ला में उसी स्थान पर बच्चों का एसर परीक्षण। यह गतिविधि समुदाय को आकर्षित करती है और कुछ हद तक समुदाय को संलग्न रखती है तथा यह लघु समूह गोष्ठी हेतु आधार बनाती है।

    ब. उसी स्थान पर परीक्षण के आंकड़ों को समुदाय के साथ बांटना और बातचीत प्रारम्भ करना।

    स. छोटे समूहों की गोष्ठी में बच्चों के साथ प्रथम की गतिविधियों का प्रदर्शन।

- विद्यालयों में गतिविधियां : विद्यालय के प्रधानाध्यापक के साथ प्रथम तथा इसके कार्यक्रम का उचित परिचय। विद्यालयों के साथ भावात्मक संबंध (रेपो) बनाना तथा प्रथम की गतिविधियों का सामग्री के साथ प्रदर्शन।

टिप्पणी

क्रियाकलाप-2

क्या आप अपने क्षेत्र में किसी स्वयं सेवी संस्था को जानते है जो प्राथमिक शिक्षा से जुड़ी हो। अपने निवास स्थान या विद्यालय के आस-पास के समुदाय में इस प्रकार की गतिविधियों का पता लगाए। स्वयं सेवी संस्था द्वारा ली गई सामुदायिक संचालन संबंधी गतिविधियों को सूचीबद्ध करें।

....

....

....

9.4 शिक्षक तथा सामुदायिक संचालन

अब आपने सामुदायिक संचालन की प्रक्रिया, इसका महत्त्व तथा इसमें सम्मिलित विभिन्न कार्यों के बारे में सीख लिया है। इस इकाई में पहले दिए गए दृश्य-2 में स्कूल स्थिति तथा एक शिक्षक के संदर्भ में सामुदायिक संचालन पर चर्चा की गई है। क्या आप ऐसे समुदायों के बारे में विचार कर सकते है जिनसे एक शिक्षक या स्थानीय निवासी के रूप में आपका संपर्क हुआ हो।

ऐसे सभी समुदायों को सूचीबद्ध कीजिए:

....

....

....

आपके द्वारा चिन्हित समुदायों में से इनकी सामान्य आवश्यकता सुझाएं। चिन्हित आवश्यकता की पूर्ति हेतु सामुदायिक संचालन के तरीके भी सुझाएं। (पहले दिए गए दृश्य-2–एक संबद्ध शिक्षक से संदर्भ लें)

....

....

....

9.5 सारांश

- सामुदायिक संचालन एक प्रक्रिया है जिसमें समुदाय के व्यक्ति योजना बनाते हैं और उसे क्रियान्वित करते है।

टिप्पणी

- सामुदायिक संचालन एक क्षमता-निर्माण की प्रक्रिया है जिसमें समुदाय के व्यक्ति, समूह या संस्थाएं नियोजन करते हैं, कार्यान्वयन तथा क्रियाओं का मूल्यांकन स्वयं की पहल या दूसरों द्वारा अभिप्रेरित होकर सहभागी तथा निरन्तरता के आधार पर करते है। यह कार्य वे अपने समुदाय के विकास हेतु करते हैं।
- सामुदायिक संचालन किसी कार्यक्रम या हस्तक्षेप की सफलता हेतु बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसके द्वारा हस्तक्षेपों की प्रभाविकता व दक्षता बढ़ाने तथा मांग उत्पन्न करने में सहायता मिलती है। संसाधन प्रदान करने, सर्वाधिक आवश्यकता वालों तक पहुंचने, शिक्षा को प्रभावित करने वाले मुद्दे: लिंग-भेद, जागरूकता का अभाव आदि को दूर करने और सामुदायिक स्वामित्व तथा निरन्तरता को बटाने में भी सामुदायिक संचालन सहायक है।
- सामुदायिक संचालन प्रक्रिया में कई कार्य सम्मिलित है।
- कार्यों में क्रमबद्धता बहुत महत्त्वपूर्ण है।
- सामुदाय संचालक वह व्यक्ति है जो सामुदायिक प्रतिभागिता को बढ़ावा देता है और यह सुनिश्चित करता है कि सामान्य लक्ष्य की प्राप्ति हेतु संसाधन संचालित किए जा रहे हैं।
- एक शक्तिशाली समुदाय संचालक के पास विशेष प्रकार के कौशलों होने चाहिए। इस संदर्भ में प्रभावी संप्रेषण। कौशल बहुत महत्त्वपूर्ण है।
- एक शिक्षक प्रभावी समुदाय संचालक हो सकता है और वह विद्यार्थियों के अधिगम तथा उपलब्धि को बढ़ाने के लिए उपलब्ध संसाधनों का अधिकतम उपयोग कर सकता है।

9.6 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

- Handbook for literacy and non-formal education facilitators in Africa. Module 1: Community Sensitization and Mobilization for Development UNLD-LIFE Publication. Available at: http://unesdoc.unesco.org/images/0014/001446/144656e.pdf; *Accessed on 1st October 2011*
- Pratham Diploma Course in Community Leadership for Education. Module on Community mobilization (2011) (course of Pratham Community college).
- ASER centre certificate programme for Survey and Research Coordinators; Study material developed for Course domain – Basic Communications (2011).
- Overview on Community Mobilisation under Sarva Shiksha Abhiyan. http://ssa.nic.in *Accessed on 8th October 2011.*
- Getting children back to school. Case studies in Primary Education (2003). Editor- Vimala Ramachandran. Sage Publications India Pvt Ltd.

टिप्पणी

9.8 अन्त्य इकाई अभ्यास

एसएसए के अनुभाग 9.4% में सूचीबद्ध कम से कम एक सामुदायिक संचालन गतिविधि का चयन करें और उसका वर्णन अपने शब्दों में लिखें (न्यूनतम 500 शब्द)

टिप्पणी

इकाई–10 विद्यालय का प्रबंधन

संरचना

10.0 प्रस्तावना

इससे पूर्व की इकाई में आपने विद्यालयी शिक्षा में समुदाय संचालन के तरीके तथा संसाधनों का अध्ययन किया। विद्यालय के प्रबंधन में समुदाय को संलग्न करना बहुत महत्त्वपूर्ण है। यह संलग्नता विद्यालय के लिए सामुदायिक स्वामित्व को विकसित करती है। इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु यह जानना आवश्यक है कि विद्यालय को कैसे प्रबंधित किया जाय। दूसरों के प्रयासों द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु उन्हीं के माध्यम से कार्य करने की प्रक्रिया प्रबंधन कहलाती है।

टिप्पणी

इस इकाई में आप विद्यालय प्रबंधन का अर्थ एवं प्रकृति, प्रबंधन के तत्त्व, उसके कार्य/नियम तथा प्रबंधन के प्रकारों का अध्ययन करेंगे।

10.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप इस योग्य हो जाएंगे कि :

- विद्यालय प्रबंधन को परिभाषित कर सकें।
- प्रबंधन की प्रकृति की व्याख्या कर सकें।
- प्रबंधन के तत्त्वों का वर्णन कर सकें।
- प्रबंधन के कार्यों को सूचीबद्ध कर सकें।
- प्रबंधन के प्रकारों का वर्गीकरण कर सकें। सहभागी तथा असहभागी प्रबंधन
- सहभागी प्रबंधन की प्रक्रिया की व्याख्या कर सकें।

10.2 विद्यालय प्रबंधन का अर्थ और प्रकृति

प्रत्येक संस्था (विद्यालय सहित) के सफलता पूर्वक कार्य करने हेतु प्रबंधन बहुत महत्त्वपूर्ण है। प्रबंधन की अवधारणा को समझने के लिए निम्नलिखित कहानी पढ़ें:

लक्ष्मी, नगर निगम प्राथमिक विद्यालय हरिनगर, नई दिल्ली में प्राचार्या के पद पर कार्यरत थीं, उनका स्थानान्तरण एक दूसरे विद्यालय नगर निगम प्राथमिक विद्यालय श्याम विहार में हो गया। कार्यभार ग्रहण करने के तुरंत पश्चात उसने विद्यालय का गहन निरीक्षण किया और एक स्टाफ मीटिंग का आयोजन किया। उसने शिक्षकों से विद्यालय की कार्य प्रणाली, समस्याओं तथा आवश्यकताओं के बारे में पूछा। उसने शिक्षकों से यह भी पूछा–आप क्या समझते हैं कि विद्यालय की कौन सी ऐसी समस्या है जिसका तुरंत समाधान आवश्यक है। शिक्षकों ने बताया कि वर्तमान में विद्यालय की मुख्य समस्या विद्यार्थियों की उपस्थिति में कमी है। प्राचार्या ने शिक्षकों से कहा कि वे विद्यार्थियों की कम उपस्थिति के कारणों का पता लगाएं। शिक्षक उन कारणों को पहले से ही जानते थे। उन्होंने उन कारणों को निम्न प्रकार से सूचीबद्ध किया :

- लड़कियां घर पर अपने भाई-बहनों की देखभाल करती हैं क्योंकि उनके अभिभावक काम पर जाते हैं।
- लड़के अपने पिता के साथ सब्जी की दुकान पर, चाय की दुकान पर या अन्य कार्यों में मदद करते है।

टिप्पणी

- कभी-कभी अभिभावक किन्हीं कारणों वंश गांव चले जाते हैं और 2 या 3 महीने में वापस आते है।
- अभिभावक निरक्षर हैं, इस कारण वे अपने बच्चों की विद्यालय में उपस्थिति पर ध्यान नहीं देते।
- विद्यार्थियों को विद्यालय में उनकी पूरी उपस्थिति हेतु कोई प्रोत्साहन नहीं मिलता।

इन कारणों को जानने के बाद प्राचार्य तथा शिक्षकों ने यह निर्णय लिया कि इस समस्या के समाधान हेतु एक योजना बनाई जाय। उसके बाद उन्होंने योजना हेतु आवश्यक संसाधनों पर चर्चा की। उन्होंने इस कार्य के लिए निम्न संसाधनों की पहचान की :

- **भौतिक**–अभिभावकों के लिए गोष्ठी में बैठने हेतु कमरों तथा कुर्सियों की व्यवस्था करना, उनके लिए जलपान, उन विद्यार्थियों के लिए कुछ पुरस्कार जो नियमित रूप से विद्यालय में उपस्थित रहते थे, और शिक्षकों के लिए प्रमाण-पत्र। ये सभी संसाधन विद्यालय में उपलब्ध थे।

मानवीय–अभिभावक, शिक्षक तथा विद्यार्थी, अभिभावकों व विद्यार्थियों के परामर्श हेतु विशेषज्ञ।

आर्थिक–विद्यार्थियों के प्रोत्साहन हेतु सामग्री, अभिभावकों हेतु जलपान आदि।

उन्होंने योजना बनाने के लिए निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए :

- तीन महीनों के अंदर विद्यार्थियों की उपस्थिति में कम से कम 20% बढ़ाना।
- अभिभावकों को अपने बच्चों को नियमित रूप से विद्यालय भेजने हेतु अभिप्रेरित करना।
- विद्यार्थियों को नियमित रूप से विद्यालय में आने के लिए अभिप्रेरित करना।
- अभिभावकों तथा विद्यार्थियों के परामर्श हेतु शिक्षकों का सहजीकरण
- निरक्षर अभिभावकों को शिक्षित करना।

चिहिन्त कारणों तथा निर्धारित उद्देश्यों के आधार पर प्राचार्या तथा शिक्षकों ने विद्यार्थियों की उपस्थिति बढ़ाने के लिए निम्नलिखित प्रविधियों की रचना की :

- कम उपस्थिति वाले विद्यार्थियों के अभिभावकों का परामर्श
- कम उपस्थिति वाले विद्यार्थियों पर अधिक ध्यान देना
- विद्यार्थियों को प्रोत्साहन देना
- शिक्षकों को क्रिया-कलाप आधारित शिक्षण हेतु प्रेरित करना।
- विद्यार्थियों की उपस्थिति की साप्ताहिक जांच करना।
- निरक्षर अभिभावकों के लिए साक्षरता कक्षाओं की व्यवस्था करना।

टिप्पणी

तत्पश्चात प्राचार्या ने विभिन्न कर्तव्य शिक्षकों को सौंपे। साथ ही उसने शिक्षकों से योजना हेतु अनुमानित व्यय के बारे में चर्चा की। उन्होंने रु. 5000 का बजट बनाया और आवश्यकता अनुसार प्रत्येक प्रविधि हेतु एक धनराशि निश्चित की। प्राचार्या ने शिक्षकों के साथ योजना की मानीटरिंग तथा मूल्यांकन पर भी चर्चा की। शिक्षकों ने सुझाव दिया कि दो शिक्षक कार्यक्रम का मूल्यांकन करेंगे। यह योजना शिक्षकों की सहायता से लागू की गई तथा आवश्यकतानुसार उपचारात्मक उपाय किए गए। प्राचार्या ने शिक्षकों के साथ पूरा समन्वयन रखा और निरंतर फीड बैक लिया कि कार्य ठीक प्रकार से हो रहा है या नहीं। तीन माह पश्चात योजना का अंतिम मूल्यांकन किया गया और उससे पता लगा कि विद्यार्थियों की उपस्थिति में 18% की वृद्धि हुई। प्राचार्य ने शिक्षकों के कार्य की प्रशंसा की। इस प्रकार प्राचार्या ने विद्यालय का प्रभावशाली तथा दक्षतापूर्ण तरीके से प्रबंधन किया।

उपर्युक्त कहानी के आधार पर निम्नलिखित की पहचान करें:

- विद्यालय प्रबंधन का अर्थ क्या है?
- विद्यालय प्रबंधन में कौन-कौन सी प्रक्रियाएं सम्मिलित है?
- प्राचार्या ने विद्यार्थियों की उपस्थिति बढ़ाने हेतु योजना कैसा बनाई?

उपर्युक्त उदाहरण से कहा जा सकता है कि प्रबंधन वह प्रक्रिया है जिसमें सहयोगी समूह विद्यालय के लक्ष्यों की प्रति हेतु क्रियाओं को निर्देशित करता है। प्रबंधन की कुछ परिभाषाएं निम्नलिखित हैं:

1. ''औपचारिक रूप से संगठित समूहों को व्यक्तियों द्वारा तथा व्यक्तियों के साथ मिलकर कार्य पूर्ण करने की कला प्रबंधन है।'' (हरोल्ड कूंज)
2. ''प्रबंध करने का अर्थ है –भविष्यवाणी करना, और नियोजना करना, संगठित करना, कमांड करना, समन्वयन तथा नियंत्रण करना है।'' (हेनरी फयोल)
3. ''प्रबंधन व्यक्तियों के माध्यम से कार्य पूर्ण करने की कला है'' (मेरी पार्कर फोलेट)

किसी संस्था के प्रबंधन में कई संसाधनों (इनपुट) का प्रयोग प्रतिफल (आउटपुट) प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रक्रियाओं (प्रोसेसेज) द्वारा किया जाता है। उदाहरण के लिए विद्यालय प्रबंधन में इनपुट हैं : इन्फ्रास्टक्चर, सुविधाएं, निधियां, शिक्षक, विद्यार्थी शिक्षण-अधिगम विधियां तथा सामग्री। विद्यार्थियों की पाठ्य तथा पाठ्य-सहगामी क्रियाओं में उपलब्धि, शिक्षकों का व्यावसायिक विकास आदि, आउटपुट हैं। शिक्षण-अधिगम क्रियाएं, अनुशासन, वातावरण तथा अन्य शैक्षिक कार्य विद्यालय-प्रक्रियाओं के अन्तर्गत आते हैं। इस प्रकार इनपुट में शामिल हैं : मैनपावर (पुरुष एवं महिला) सामग्री, मशीनरी, विधियां धन। इनको प्रबंधन के 5 एमृस कहते हैं।

प्रबंधन के पांच एम

मनी, मैन पावर, मैथड, मैटीरियल, मशीनरी

विभिन्न संसाधनों का दक्षतापूर्ण उपयोग प्रबंधन की योग्यता तथा प्रकृति पर निर्भर करता है। संस्था के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए संसाधनों के दक्षतापूर्ण उपयोग, संचालन व समन्वयन पर

विशेश ध्यान देना चाहिए। यह भी सुनिश्चित करना आवश्यक है कि संसाधन उपयुक्त मात्रा, गुणवत्ता तथा अल्प-व्यय में निरन्तर उपलब्ध रहें।
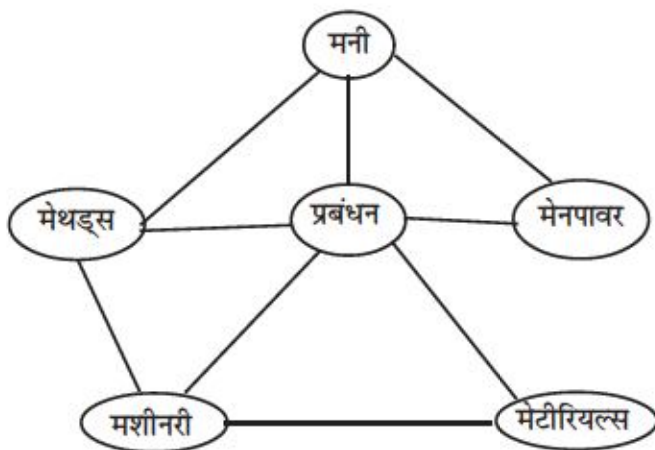
चित्र 1: प्रबंधन के पाँच ऐम्स

प्रबंधन की प्रकृति

प्रबंधन कार्यों को बेहतर तरीके से करता है तथा संसाधनों का पूर्णत: उपयोग करता है। प्रबंधन की निम्न विशेषताएं हैं :

- लक्ष्य उन्मुखी
- सर्वभ व्याप्ता
- समेकित प्रक्रिया
- सामाजिक प्रक्रिया
- क्रिया-कलाप आधारित
- सामूहिक गतिविधियां
- कला व विज्ञान दोनों
- निरंतर प्रक्रिया
- अमूर्त
- रचनात्मक

प्रबंधन की अवधारणा

प्रबधंन का मूल निर्णय लेना तथा मुख्य क्षेत्र संसाधन और उद्देश्य हैं।
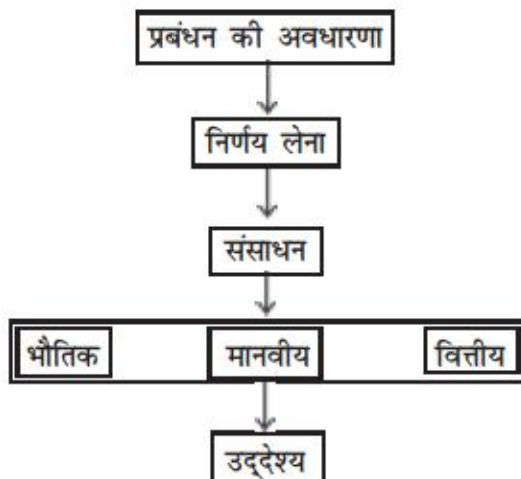
इसमें नियोजन, संगठन मानीटरिंग, नियंत्रण तथा मूल्यांकन निहित रहता है।

टिप्पणी

10.3 प्रबंधन के तत्त्व

उपर्युक्त केस की कहानी पढ़ने के बाद आप समझ गए होंगे कि विद्यालय के प्राचार्य ने विद्यार्थियों की उपस्थिति बढ़ाने के लिए क्रमबद्ध रूप से कई गतिविधियों का आयोजन किया। क्रमानुसार की जाने वाली ये गतिविधियां प्रबंधन के तत्त्व कहलाती हैं। मुख्य रूप से ये निम्न प्रकार से वर्गीकृत की गई हैं :

- पारिस्थितिक विश्लेषण
- प्रविधियों की रचना
- प्रविधियों का कार्यान्वयन
- प्रविधियों का मूल्यांकन

पारिस्थितिक विश्लेषण :

प्रबंधन की प्रक्रिया में परिस्थितियों का विश्लेषण प्रथम कदम है। विद्यालय के मिशन के निर्माण हेतु परिस्थिति विश्लेषण आवश्यक जानकारी प्रदान करता है। यह विश्लेषण विद्यालय के वातावरण के मूल्यांकन में सहायक होता है। विश्लेषण का कार्य विभिन्न विधियों द्वारा किया जा सकता है। निरीक्षण और संवाद दो बहुत प्रभावशाली विधियां हैं। चर्चा, साक्षात्कार तथा सर्वेक्षण का प्रयोग विद्यालय के आंतरिक वातावरण के विश्लेषण हेतु किया जा सकता है। उपर्युक्त केस में प्राचार्या ने विद्यालय स्थिति जानने हेतु चर्चा का प्रयोग किया।

प्रविधियों की संरचना

विद्यालय के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रविधियों का विकास करना इस कदम के अन्तर्गत आता है। विद्यालय के विभिन्न कार्यों के लिए विभिन्न प्रकार की प्रविधियों की संरचना की जा सकती है। उदाहरण के लिए इन्फ्रास्ट्रकचर का रख-रखाव, विद्यार्थियों की उपलब्धि में सुधार, विद्यालय में विद्यार्थियों की उपस्थिति में वृद्धि करना–जैसा कि उपर्युक्त केस में किया गया है।

प्रविधियों का क्रियान्वयन

इसके अन्तर्गत प्रविधि को व्यवहारिक रूप दिया जाता है। प्रविधि के क्रियान्वयन हेतु चरण, विधियां तथा उपागमीं का विकास करना इसमें शामिल है। इसमें यह भी निश्चित किया जाता है कि कौन सी प्रविधि सर्वप्रथम लागू की जाएगी। मुद्दों की गम्भीरता के आधार पर प्रविधि को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। विद्यालय को सर्वप्रथम सबसे खराब स्थिति से संबंधित समस्याओं को केंद्रित करना चाहिए। इन समस्याओं के दूर करने के बाद अन्य समस्याओं पर कार्य करना चाहिए।

टिप्पणी

प्रविधियों का मूल्यांकन

इसके अर्न्तगत प्रविधियों के क्रियान्वयन के बाद यह देखा जाता है कि क्या कार्य निर्धारित समय के अर्न्तगत हो गया है? प्रक्रियाओं का संचालन ठीक प्रकार से हो रहा है या नहीं और अपेक्षित परिणामों को प्राप्त कर लिया गया है? यदि कार्य समय के अनुसार पूरा नहीं हुआ, प्रक्रियाओं का संचालन भी ठीक प्रकार से नहीं किया गया और अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं हुए तो प्रविधि को बदल कर पुनः लागू किया जाता है। प्रबंधन तथा कार्यकर्ता दोनों ही प्रविधियों की संरचना में सहभागी होते है, क्योंकि प्रत्येक प्रविधि के क्रियान्वयन को भिन्न परिप्रेक्ष्य में देखते हैं। एक कार्यकर्ता किसी विशेष क्रियान्वयन के चरण में किसी समस्या को पहचान सकता है जिसे कि प्रबंधन समझने या पहचानने में असमर्थ हो सकता है। प्रविधि प्रबंधन एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है क्योंकि संस्था के सदस्यों द्वारा परिणामों को संस्था के लक्ष्यों के परिपेक्ष में समझा जाता है। प्रविधियों को संस्था की आवश्यकतानुसार बदला जा सकता है।

प्रगति जाँच-1

1. एक प्राथमिक विद्यालय में आप अनुशासनहीनता की समस्या को कैसे दूर करेंगे? प्रबंधन के तत्त्वों के आधार पर इसकी चर्चा कीजिए।

....

....

....

10.4 प्रबंधन के नियम/कार्य

10.4.1 नियोजन

नियोजन प्रबंधन का आधारभूत कार्य है जिसमें उद्देश्यों का निर्धारण तथा इन उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु कार्यों को निश्चित करना शामिल है। इसमें पांच प्रश्न सम्मिलित हैं : क्या, कब, कहां, कौन और कैसे करना है? नियोजन के लिए आवश्यक है कि प्रबंधक अपनी संस्था के वातावरण के प्रति जागरूक हों और भविष्य में वातावरण की स्थिति की घोषणा करें। इसके अर्न्तगत यह भी आवश्यक है कि प्रबंधक अच्छे निर्णयकर्ता हों। जैसा कि उपर्युक्त उदाहरण में विद्यालय की प्राचार्या ने विद्यालय की कार्यशैली तथा समस्याओं को समझने हेतु विद्यालय का गहन निरीक्षण किया। उसने निर्णय लेने की प्रक्रिया में प्रजातांत्रिक उपागम का प्रयोग किया। इस प्रकार नियोजन भविष्य के कार्यों का वैज्ञानिक अनुमान लगाना है। यह समन्वन का एक अभ्यास कार्य है क्योंकि विभिन्न विकल्पों में से सही विकल्प का चयन इस प्रक्रिया का मुख्य अंग है।

हम कहां पर है और कहां जाना चाहते हैं? इसके बीच के अंतर को नियोजन द्वारा पूरा किया जाता है। नियोजन में निम्नलिखित चरण सम्मिलित हैं :

1. उद्देश्यों का निर्धारण
2. संसाधनों की पहचान
3. भविष्य के कार्यों की उद्घोषणा
4. नीति, नियम, प्रविधि आदि की रचना
5. कार्य-योजना, बजट आदि का निर्माण
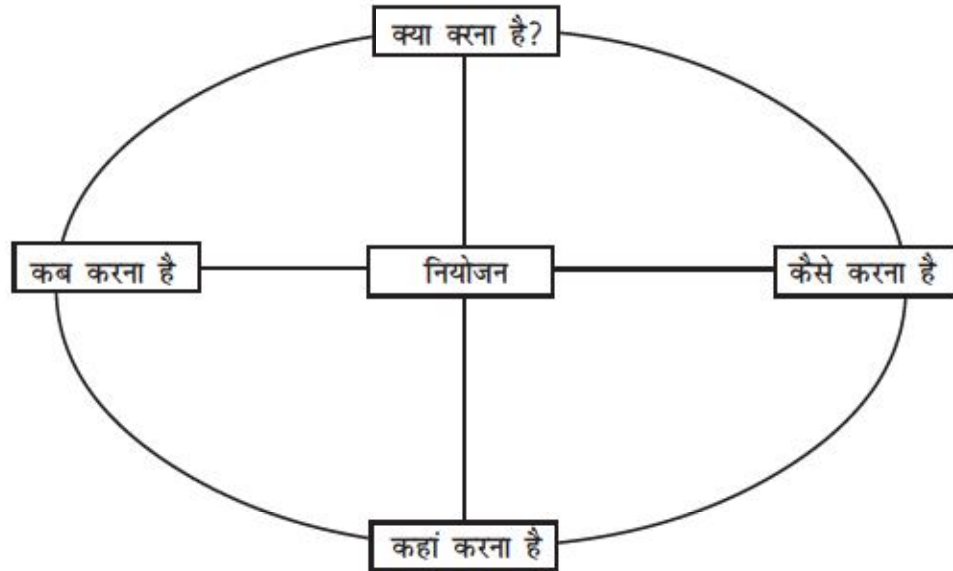
चित्र 2: नियोजन-प्रक्रिया

10.4.2 बजट बनाना

भविष्य की योजनाओं को संख्यात्मक अभिव्यक्ति को बजट के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। किसी संस्था के विभिन्न स्तरों पर बजट बनाए जा सकते हैं। मास्टर बजट की परिभाषा है– 'एक निश्चित अवधि के लिए पूरी योजना जो संस्था के लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्रदर्शित करती है। यदि बजट ठीक प्रकार से बनाया जाए तो यह नियोजन और नियन्त्रण प्रणाली की भाँति कार्य कर सकता है। विद्यालय के लक्ष्य तथा निष्पादन उद्देश्य वित्तीय भाषा (टर्मस) में अभिलेखित होते हैं। एक बार योजना बना लेने के बाद ये पूरे वर्ष उपयोग में लाए जाते हैं। मासिक निष्पादन रिपोर्ट द्वारा वास्तविक परिणामों की तुलना बजट परिणामों से होती है। विभिन्न कार्यों के नियन्त्रण हेतु प्रबंधन निष्पादन रिपोर्ट की जाँच कर सकता है तथा सुधार हेतु आवश्यक कदम उठा सकता है।

10.4.3 संगठित करना

उद्देश्यों को निर्धारित करने तथा उन्हें प्राप्त करने हेतु साधन व विधि निश्चित करने के बाद दूसरा कदम है–योजना के क्रियान्वयन हेतु आवश्यक मानवीय तथा भौतिक संसाधनों को एक

टिप्पणी

साथ मिलाना है। एक विद्यालय के प्रबंध का अर्थ हैं–विद्यालय को अपना कार्य करने-करने के लिए हर चीज प्रदान करना। सामग्री, उपकरण धन तथा व्यक्ति। संगठन की संरचना (प्रशासन, जिम्मेदारी तथा संबंधों का जाल) एक फ्रेमवर्क का कार्य करती है जिसके द्वारा प्रबंधन का कार्य व्यक्तिगत प्रयासों के समन्वयन द्वारा किया जाता है। संगठन के कार्य को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है–'क्रियाकलापों का समूहन, उनकों कार्यकताओं में आवंटित करना तथा विभिन्न पदाधिकारियों के बीच प्राधिकार, जिम्मेदारी तथा संबंध स्थापित करना।' उपर्युक्त केस में प्राचायी ने विभिन्न क्रिया-कलापों का संगठन कर उन्हें शिक्षकों को सौंपा। संगठन की प्रक्रिया में निम्नलिखित चरण सम्मिलित हैं :

- उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु आवश्यक गतिविधियों की पहचान।
- एक समान गतिविधियों का प्रबंध करने योग्य इकाइयों में समूहन करना।
- उपयुक्त व्यक्तियों को कार्यों को सौंपना।
- व्यक्तियों को आवश्यक अधिकार प्रदान करना तथा परिणामों हेतु जिम्मेदारियां निश्चित करना।
- अधिकार, जिम्मेदारी तथा व्यक्तियों में संबंध को परिभाषित करना, संगठन के अंदर व्यक्तिगत कार्यों के डिजाइन तैयार करना भी इस प्रक्रिया में सम्मिलित है। संगठन में व्यक्तिगत कार्यों की जिम्मेदारियां तथा कर्तव्यों के बारे में और किस तरीके से इन कर्तव्यों का निर्वाह किया जाय, के विषय में निर्णय अवश्य लिए जाने चाहिए। मानवीय संसाध नों का सर्वाधिक प्रभावशाली रूप से उपयोग करने हेतु व्यक्तिगत कार्यों को कितने अच्छे तरीके से डिजाइन किया जा सकता है। यह कार्यों के स्तर पर संगठन करने की प्रक्रिया में शामिल है।

10.4.4 निर्देशन

उपर्युक्त कहानी में लक्ष्मी-प्राचार्या ने सभी शिक्षकों को योजना के कार्यान्वयन हेतु विभिन्न निर्देश दिए। अत: हम कह सकते हैं कि एक प्रबंधक योजना बनाने व संगठित करने का कार्य कर सकता है परंतु उचित परिणाम तब तक प्राप्त नहीं हो सकते जब तक योजना का क्रियान्वयन नहीं हो जाता। यह निर्देशन द्वारा ही संभव है जिसका अर्थ है–कार्य करना। निर्देशन, प्रबंधन प्रक्रिया का वह अंग है जो संस्था के कार्यकर्ताओं को निर्धारित उद्देश्यों की प्राति हेतु प्रभावशाली व दक्षतापूर्ण ढंग से काम करने के लिए सक्रिय बनाता है। यह योजना के क्रियावन्यन से संबंधित है। यह संगठित कार्यों की पहल करता है तथा संस्था को सफलता की ओर अग्रसर करता है। निर्देशन प्रबंधन प्रक्रिया का अंर्तव्यक्तिगत संबंधों का क्षेत्र है क्योंकि यह इसमें संस्था के अधीन कार्यकर्ताओं को संस्था के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु प्रभावी बनाना, निर्देशित करना तथा अभिप्रेरित करना शामिल है।

10.4.5 समन्वयन

एक संस्था में बहुत से कार्यकर्ता होते हैं। इनमें से प्रत्येक एक विशेष कार्य निष्पादित करता है।

टिप्पणी

इसलिए यह आवश्यक है कि विभिन्न व्यक्तियों तथा कार्यों के बीच ताल-मेल बनाया जाय। विभिन्न विशिष्ठ कार्यों तथा समूह के व्यक्तियों के प्रयासों के बीच ताल-मेल बनाना ताकि संस्था के निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति हो सके, समन्वयन कहलाता है। यह सामूहिक प्रयासों को सामान्य लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु क्रमानुसार व्यवस्थित करना है। जिससे क्रिया-कलापों में एकरूपता आ सके। विभिन्न व्यक्तियों तथा अनुभागों के क्रियाकलापों के बीच समरूपता, समेकन तथा सामंजस्य बनाना इस प्रक्रिया में शामिल है। समन्वयन का केंद्र उद्देश्यों में एकता रखता है जिसमें समय का विभाजन तथा विभिन्न क्रियाकलापों को संपन्न करने का तरीका सम्मिलित है। यह निरंतर व गतिशील प्रक्रिया है। समन्वयन प्रबंधन की मूल जिम्मेदारी है, सोचिए कि उपरोक्त विद्यालय में प्राचार्या ने विभिन्न शिक्षकों तथा गतिविधियों को कैसे समन्वित किया।

10.4.6 नियंत्रण

इसके अंर्तगत यह सुनिश्चित किया जाता है कि संस्था का निष्पादान निर्धारित मानकों से विचलित न हो पाए। नियंत्रण में तीन चरण शामिल हैं–निष्पादन मानकों का निर्धारण, वास्तविक निष्पादन की निर्धारित मानकों के साथ तुलना करना तथा आवश्यकतानुसार सुधार के उपाय करना। निष्पादन मानक प्रायः धन के रूप में परिभाषित किए जाते हैं। जैसे–राजस्व, मूल्य तथा लाभ। परन्तु इन्हें अन्य रूप में भी निर्धारित किया जा सकता है जैसे–उपयुक्त उदाहरण में विद्यार्थियों की उपस्थिति में 20% की वृद्धि निष्पादन संकेतक है।

10.4.7 निर्णय लेना

पीछे दिए गए केस में आपने देखा कि लक्ष्मी-विद्यालय की प्राचार्या ने विद्यालय में कार्य-भार ग्रहण करने के तुरंत पश्चात् निर्णय लिया कि उस समय जिस समस्या के तुरंत समाधान की आवश्यकता थी, उस पर कार्य किया जाय। इससे आप समझ सकते हैं कि निर्णय लेने की प्रक्रिया प्रबंधन का आवश्यक अंग है। यह प्रबंधन का प्रमुख कार्य है। एक प्रबंधक का सबसे बड़ा कार्य उपयुक्त निर्णय लेने का है। वह जाने या अनजाने सैकड़ों निर्णय लेता है। यह कार्य एक प्रबंधक को विभिन्न कार्यों की कुंजी है। निर्णय महत्त्वपूर्ण होते है क्योंकि वे प्रबंधकीय तथा संस्था के क्रियाकलापों को सुनिश्चित करते हैं। निर्णय लेने को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है–"वांछित परिणामों की प्राप्ति हेतु विभिन्न विकल्पों में से क्रिया-कलापों के एक सैट को जानबूझकर निर्धारित करना" यह एक बौद्धिक प्रक्रिया कही जा सकती है। निर्णय लेने की प्रक्रिया प्रबंधन में नियोजन के साथ संपन्न की जाती है। नियोजन के बाद किए जाने वाले कार्य हैं–संगठित करना, निर्देशित करना, समन्वित करना, नियंत्रण रखना तथा अभिप्रेरित करना। निर्णय लेने की प्रक्रिया नियोजन से पहले की प्रक्रिया है। प्रबंधकीय निर्णय अधिकतम संभावित सीमा तक सही होने चाहिए। इसके लिए वैज्ञानिक निर्णय लेने की प्रक्रिया आवश्यक है। निर्णय लेने की प्रक्रिया में निम्नलिखित बातें सम्मिलित हैं–

- चुनाव
- निरंतर क्रिया-कलाप/प्रक्रिया
- बौद्धिक क्रिया-कलाप

- प्रासंगिक सूचना पर आधारित
- लक्षोन्मुखी प्रक्रिया
- साधन न कि अंत है
- विशिष्ट समस्या से संबंधित
- समय का उपयोग करने वाली गति-विधि
- प्रभावी संप्रेषण की आवश्यकता

निर्णय लेने की प्रक्रिया के चरण

1. प्रबंधन संबंधी समस्या को परिभाषित/चिन्हित करना
2. समस्या का विश्लेषण
3. वैकल्पिक समाधानों का विकास
4. उपलब्ध विकल्पों में से सर्वोत्तम समाधान चुनना
5. निर्णय को कार्य रूप में परिणित करना
6. अनुवर्तन (फौलोअप) हेतु प्रतिपुष्टि सुनिश्चित करना
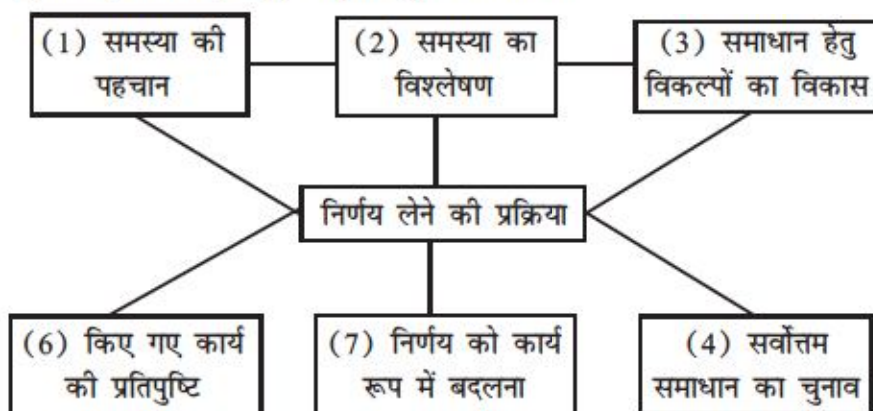
निर्णय लेने की प्रक्रिया

10.4.8 मूल्यांकन-गति-विधियां तथा कार्यक्रम

सभी कार्यक्रम हेतु नियोजित सभी गतिविधियों को भविष्य में सुधार की आवश्यकता होती है क्योंकि आंतरिक तथा वाह्य कारण सदैव बदलते रहते हैं। प्रविधियों के मूल्यांकन तथा नियंत्रण की प्रक्रिया में प्रबंधक यह देखने का प्रयास करते है: नियोजित और चयनित गतिविधियां तथा उन पर प्रभाव डालने वाले आंतरिक व वाह्य कारक, निष्पादन को मापना तथा सुधार हेतु उपाय करना। यह एक सतत् प्रक्रिया होनी चाहिए ताकि सुधारात्मक उपाय किए जा सके और समय तथा संसाधनों की बरबादी न हो। स्मरण कीजिए कि पीछे दी गई कहानी में प्राचार्या ने मूल्यांकन गति विधियों को किस प्रकार संगठित किया होगा?

टिप्पणी

प्रगति जाँच-2

1. प्रबंधन के कार्यों के आधार पर अपने विद्यालय में कक्षा V के विद्यार्थियां की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने के लिए यह एक योजना बनाइए।

....

....

....

10.5 प्रबंधन के प्रकार - सहभागी तथा असहभागी

प्रबंधन की प्रक्रिया मुख्य रूप से सामाजिक प्रक्रिया है क्योंकि कि इसकी गतिविधियां जो लक्ष्य प्राप्ति हेतु निष्पादित की जाती हैं वे अधिकांश रूप में व्यक्तियों के संबंधों से संबद्ध होती है। प्रबंधक व्यक्तियों के साथ व्यक्तियों द्वारा कार्य करता है तथा व्यक्तियों के लाभ हेतु परिणाम प्राप्त करता है। इस प्रकार मानवीय कारक प्रबंधन का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अंग है। निर्णय लेना प्रबंधन प्रक्रिया का आधार है। इसलिए कार्यकर्ता तथा उपभोक्ता दोनों को ही इस प्रक्रिया में सम्मिलित किया जाना चाहिए। परन्तु कभी-कभी मात्र प्रबंधक स्वयं ही निर्णय ले लेता है। व्यक्तियों की प्रतिभागिता के आधार पर दो प्रकार की प्रबंधन प्रक्रियाएं हो सकती है।

10.6 सहभागी प्रबंधन प्रक्रिया

सहभागी प्रबंधन की प्रक्रिया में संस्था के कार्यकर्ताओं को संस्था के निर्णय लेने की प्रक्रिया में सहभागी बनाने के लिए सशक्त बनाया जाता है। इस प्रथा का विकास सन् 1920 में मानव संबंध आंदोलन के दौरान हुआ और यह रिसर्च स्कौलर्स जो प्रबंधन तथा संस्थागत अध्ययन के अंर्तगत शोध कार्य कर रहे थे, द्वारा अन्वेशित कुछ सिद्धांतों पर आधारित है। सहभागी प्रबंधन में संस्था के कर्मचारियों को अपने कार्य करने की स्थितियां एक सुरक्षित वातावरण में किस प्रकार की है? के बारे में आवाज उठाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इस प्रकार के प्रबंधन में समस्याओं के विश्लेषण, प्रविधियों का विकास तथा इनके क्रियान्वयन हेतु प्रत्येक स्तर पर सभी उपभोक्ताओं को शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। हमें समस्या विश्लेषण, समाधान तथा निर्णय लेने में स्वयं के व्यवहार को थोडा सुधारने की आवश्यकता होती है, क्योंकि इन क्रियाओं में सहभागी होते हैं। सहभागी प्रबंधन का अर्थ है कि पूरा स्टाफ न कि पदाधिकारी निर्णय लेने की प्रक्रिया में भागीदार होते हैं, जो संस्था को प्रभावित करते हैं। सहभागी प्रबंधन में अंतिम निर्णय लेने की जिम्मेदारी प्रबंधक या पदाधिकारियों की होती है और वे उनके लिए जवाबदेही भी हैं। परन्तु संस्था के अन्य सदस्य जिन पर निर्णयों का प्रभाव पड़ता है, उन्हें भी सक्रिय रूप से निरीक्षण, विश्लेषण, सुझाव देने तथा संस्तुति प्रदान करने का अवसर क्रियान्वयन हेतु निर्णय लेने की प्रक्रिया में दिया जाता है।

टिप्पणी

असहभागी प्रबंधन

इस प्रकार के प्रबंधन में प्रबंधक निर्णय लेने की प्रक्रिया में अपने कार्यकर्ताओं को शामिल नहीं करता। वह सभी निर्णय स्वयं लेता है और कार्यों की जिम्मेदारी कार्यकताओं पर डाल देता है। इस प्रकार की कार्य-प्रणाली कार्यकर्ताओं को निरुत्साहित करती है और इससे उनकी कार्यक्षमता में नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार प्रतिफल भी अपेक्षित स्तर का नहीं होता। प्रबंधक तथा कर्मचारियों के बीच मित्रतापूर्ण संबंध नहीं बन पाते और संस्था के प्रति कर्मचारियों में लगाव की भावना नहीं रहती। प्रबंधन के काम करने का यह तरीका कर्मचारियों को तथा उनके व्यवसायिक प्रगति को सशक्त नहीं बनाता। इस प्रकार के प्रबंधन में संस्था के लक्ष्यों को प्राप्त करना कठिन होता है। यहां प्रबंधक एक तानाशाही नेता होता है जो मात्र कार्य करने हेतु आदेश होता है। आधुनिक समय में इस प्रकार के प्रबंधन को सफल नहीं समझा जाता है।

10.7 सारांश

- प्रबंधन व्यक्तियों के द्वारा व्यक्तियों के साथ परिणामों को प्राप्त करना है।
- प्रबंधन में धन का संचालन तथा उपयोग, मानव-शक्ति, सामग्री, मशीनरी तथा विधियां सम्मिलित है।
- प्रबंधन के अन्तर्गत कार्यों की एक शृंखला है–नियोजन, संगठन, निदेशन, नियंत्रण, समन्वयन, बजट बनाना, निर्णय लेना, मूल्यांकन करना आदि।
- प्रबंधन की प्रक्रिया दो प्रकार की होती है– सहभागी तथा असहभागी
- सहभागी प्रबंधन में उपभोक्ताओं को निर्णय लेने प्रक्रिया में प्रत्येक स्तर पर सम्मिलित किया जाता है ताकि संस्था के लक्ष्यों को सफलता पूर्वक प्राप्त किया जा सके।
- असहभागी प्रबंधन में उपभोक्ताओं/कर्मचारियों को निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल नहीं किया जाता है। मात्र प्रबंधक स्वयं सभी निर्णय लेकर क्रियाकलाप कर्मचारियों को सौंप देना है।
- आधुनिक युग में सहभागी प्रबंधन को अधिक सफल माना गया है।

10.8 प्रगति जाँच के उत्तर

प्रगति जाँच-1

1. अनुशासन हीनता की समस्या को दूर करने हेतु आप प्रबंधन के तत्त्वों के आधार पर निम्न बिंदुओं पर चर्चा कर सकते है।

   (i) **पारिस्थितिक विश्लेषण**–इसके अन्तर्गत विद्यालय में अनुशासन हीनता की समस्या के कारणों को विभिन्न तरीकों से (प्रश्नावली, समूह चर्चा, साक्षात्कार आदि)

टिप्पणी

एकत्रित करेंगे। आंकड़े विद्यार्थियों, शिक्षकों, अन्य कर्मचारियां तथा अभिभावकों से लिए जाएंगे। इन आंकड़ों के विश्लेषण द्वारा विद्यालय में अनुशासनहीनता के बहुत से कारणों की पहचान हो जाएगी। इसमें से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कारणों की सूची बनाई जाएगी।

(ii) **अनुशासनहीनता की समस्या के निवारण हेतु उपयुक्त प्रविधियों की रचना**–उपर्युक्त कारणों की सूची में से मुख्य व महत्त्वपूर्ण कारणों को दूर करने के लिए कुछ प्रविधियां सभी के सहयोग से तैयार की जाएंगी। यह भी सुनिश्चित किया जाएगा कि कौन-कौन से शिक्षक क्या-क्या काम करेंगे।

(iii) **प्रविधियों का क्रियान्वयन**–जो विधियां निश्चित की गईं, उनको लागू करने हेतु विभिन्न चरण, सामग्री तथा विधियों को सुनिश्चित किया जाएगा।

(iv) **प्रविधियों का मूल्यांकन**–प्रविधियों को लागू करने के बाद यह देखा जाएगा कि सभी प्रविधियां ठीक प्रकार लागू की गई हैं। आवश्यक सामग्री उपलब्ध है कि नहीं तथा निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति हुई या नहीं। यदि नहीं तो पुनः प्रविधियों में सुधार कर उन्हें लागू किया जाएगा।

प्रगति जाँच-2

1. आप अपने विद्यालय की स्थितियों को ध्यान में रखकर विभिन्न उपाय सुझा सकते है;

अपने विद्यालय में कक्षा 5 के विद्यार्थियों की उपलब्धि को देखें। उसके आधार पर किन-विषयों की उपलब्धि कम है, उनकी पहचान करें। कम उपलब्धि के कारणों का पता लगाएं। उन कारणों के आधार पर ठीक कदम उठाने हेतु कुछ प्रविधियों का विकास करें। संसाधनों की आवश्यकता के आधार पर चयन करें। क्रियाकलापों हेतु निर्णय लेने की प्रक्रिया आयोजित करें। उसके आधार पर योजना बनाए। नियोजन के विभिन्न चरणों का उपयोग योजना बनाते समय करें। योजना का कार्यान्वयन कैसे होगा इसके लिए कार्ययोजना भी बनाएं। योजना का समय व उद्देश्य निर्धारित करें। बजट का प्रावधान भी रखें। इस प्रकार आप कक्षा 5 के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने हेतु अपने विद्यालय की परिस्थितियों को ध्यान में रखकर योजना बना सकते हैं।

10.9 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

A collection of *case studies* of good practices adopted by States for...*ssa.nic.in/publication/Out%20of%20School%20Word%20File.pdf*

Anderson, P., and M. Pulich. "Managerial Competencies Necessary in Today's DynamicHealth Care Environment." *Health Care Manager* 21, no. 2 (2002): 1–11.

टिप्पणी

Carroll, Stephen J., and Dennis J. Gillen. "Are the Classical Management Functions Useful in

Describing Managerial Work?" *Academy of Management Review* 12, no. 1 (1980): 38–51.

Fayol, Henri. *General and Industrial Administration.* London: Sir Issac Pitman & Sons, Ltd., 1949.

Koontz, Harold, and Cyril O'Donnell. *Principles of Management: An Analysis of Managerial Functions.* New York: McGraw-Hill Book Co., 1955.

Lamond, David. "A Matter of Style: Reconciling Henri and Henry." *Management Decision* 42, no. 2 (2004): 330–356.

Mintzberg, Henry. *The Nature of Managerial Work.* New York: Harper & Row, 1973

Mukherjee (1991) *On Planning Problematic: The Role of Institutional Planning*, Segment, New Delhi

Planning Commission (1984) *Report of Working Group on District Planning, Vol. I & II*, Planning Commission, New Delhi

Robbins, Stephen P. and Mary Coulter. *Management.* Upper Saddle River, NJ: Prentice Hall, 1999

Varghese, N. V. (1997) "Decentralised Educational Planning in India: An Assessment of Training Needs", in R. Govinda (ed) *Decentralisation of Educational Management:*

Experiences from South Asia, IIEP, Paris, pp. 138-164

Varghese, N. V. (1993) *A Manual for Planning Education at District Level*, NEIPA, New Delhi

www.blogspot.com
www.introduction-to-management.com
www.principlesofmanagement.com
www.managementinnovations.wordpress.com

10.10 अन्त्य इकाई अभ्यास

1. प्रबंधन का क्या अर्थ है?

टिप्पणी

2. ''निर्णय लेना प्रबंधन प्रक्रिया का मूल है'' इस कथन की उदाहरणों के साथ व्याख्या कीजिए।

3. पारिस्थितिक विश्लेषण क्या है? एक प्राथमिक विद्यालय के प्रबंधन हेतु यह कैसे उपयोगी है?

4. प्रबंधन के क्या कार्य हैं? आपकी राय में कौन सा कार्य सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है और क्यों?

5. सहभागी प्रबंधन एक लोकतांत्रिक प्रक्रिया है। एक ग्रामीण प्राथमिक विद्यालय के प्रबंधन हेतु इस कथन की व्याख्या कीजिए।

टिप्पणी

इकाई 11 विद्यालय तथा समुदाय के संसाधनों का प्रबंधन

संरचना

11.0 प्रस्तावना

इकाई 10 में आपने प्रबंधन के तत्वों तथा नियमों (नियोजन, संगठन निदेशन, नियंत्रण, समन्वयन तथा वजट बनाना और निर्णय लेने की प्रक्रिया) के बारे में जाना आप जानते हैं कि विद्यालय के कार्यक्रम-शिक्षण तथा अन्य क्रिया-कलापों के संगठन हेतु न केवल दक्षतापूर्ण प्रबंधन की आवश्यकता होती है बल्कि वांछित परिणामों की प्राप्ति हेतु उपयुक्त वजट तथा फंड्स का दक्षतापूर्ण उपयोग भी आवश्यक है। इस उद्देश्य हेतु दो मुख्य बातें ध्यान देने योग्य हैं : (i) संसाधन पूर्ण मस्तिष्क (ii) फंड का पर्याप्त मात्रा में तथा समय पर उपलब्ध होना।

इसका तात्पर्य है कि व्यक्ति को शिक्षा और कार्य हेतु प्रशिक्षण देने से एक सफल मस्तिष्क का विकास संभव है। पर्याप्त मात्रा में तथा समय पर फंड के प्रावधान हेतु आर्थिक संसाधन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होने चाहिए। इस इकाई में हम विद्यालय कार्यक्रमों के संचालन हेतु विद्यालय तथा समुदाय दोनों के संसाधन प्रबंधन के प्रकार, तथा आय के साधनों की चर्चा करेंगे।

टिप्पणी

11.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप इस योग्य हो जाएंगे कि–

- विद्यालय प्रबंधन हेतु विभिन्न संसाधनों में अंतर कर लेंगे : जैसे–मानव, सामग्री तथा आर्थिक संसाधन
- विद्यालय के लिए आर्थिक संसाधनों का वर्गीकरण कर लेंगे:

  (अ) सरकारी

  (ब) अन्य संस्थाएं

  (स) स्थानीय निकाय

  (द) समाज का स्वेच्छिक योगदान

  (य) एनडावमेंट (दान)

  (र) बचत

  (ल) परीक्षा शुल्क

  (व) अन्य प्रकार के शुल्क

- विभिन्न प्रकार के विद्यालय प्रबंधन में आय के प्रत्येक साधन के तुलनात्मक महत्त्व का विश्लेषण कर लेंगे।
- विद्यालय के विकास में संसाधनों के प्रबंधन संचालन में समुदाय की भूमिका की व्याख्या कर लेंगे।

11.2 मानव-संसाधन

एक गांव में किसानों द्वारा फसल उगाने की प्रक्रिया के बारे में कुछ समय के लिए चिंतन करें। वे वास्तव में मानव संसाधन हैं क्योंकि वे फसल उत्पादन की प्रक्रिया द्वारा भूमि को उपजाऊ बनाते हैं। (अ) हल जोत कर खेत तैयार करना (ब) बीज बोना (स) निराई करना (द) सिंचाई करना (य) खाद डालना (र) फसल को बीमारी से बचाने के लिए कीट-नाशक डालना (ल) उत्पादित फसल का भंडारण। ये सभी प्रक्रियाओं में मानव-प्रयासों की आवश्यकता होती है। साथ ही फसल उगाने का ज्ञान, पारिवारिक श्रमिकों का संगठन, यदि वे किराए के किसान हैं तो श्रमिकों की व्यवस्था करना, बीजों की व्यवस्था करना, खाद, कीटनाशक, सिंचाई तथा फसलों को उगाने हेतु खेतों की मशीनरी आदि की व्यवस्था भी आवश्यक है। यदि फसल के उत्पादन में कमी होती है तो भी वे फसल उगाने का प्रयास जारी रखते हैं।

टिप्पणी

फसल उगाने का यह ज्ञान तथा कौशल मानव संसाधन माना जाता है। किसी भी प्रकार का गलत निर्णय, विलम्ब या असावधानी से किसानों को आर्थिक हानि हो सकती है क्योंकि फसल उगाने में प्रकृति एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है जो कि मनुष्य के नियंत्रण से बाहर है। फिर भी यहां पर यह विचार रखने का प्रयास किया जा रहा है कि एक राष्ट्र, समाज तथा समुदाय के लिए आय प्राप्त करने में मानव संसाधन बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। विद्यालयी प्रक्रिया में भी यह कुछ हद तक लागू होता है। यहां शिक्षक तथा प्रबंधक विद्यार्थियों को शिक्षित तथा प्रशिक्षित व्यक्तियों में परिवर्तित करने हेतु प्रयास करते हैं, जो अपने जीवन को बेहतर बनाने तथा अपने परिवार के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने योग्य हो जाते हैं। साथ ही वे अपने देश की आय में वृद्धि के लिए योगदान भी करते हैं। परन्तु विद्यालय में जोखिमगुणांक उतना प्रबल नहीं है क्योंकि विद्यालयों में कार्य मानदेय के आधार पर किया जाता है। शिक्षकों को शिक्षण हेतु धन दिया जाता है, और उनके जोखिम गुणांक की तुलना किसानों से नहीं की जा सकती। फसल की असफलता की स्थिति में किसानों के निवेश का नुकसान होता है और शिक्षकों के साथ ऐसा नहीं होता।

क्या आप अन्य व्यवसायों में इस प्रकार के उदाहरणों के बारे में सोच सकते हैं, जो मानव संसाधन की अवधारणा को आय उत्पन्न करने के संदर्भ में समझने हेतु सहायक हो सकते हैं। आपके लिए नीचे कुछ रिक्त स्थान दिया गया है जिसमें आपको कुछ उदाहरण लिखने हैं। एक उदाहरण आपके लिए प्रस्तुत किया गया है–

1. दुकानदार (कपड़े, मिठाई, मीट आदि)
2.
3.
4.
5.

11.3 सामग्री संसाधन

खेत, बीज, पानी, खेत की मशीनरी, बैल या ट्रैक्टर, खाद, कीटनाशक आदि के बिना एक किसान क्या कर सकता है? किसान के लिए फसल उगाने हेतु ये सब उदाहरण सामग्री संसाधन हैं। अर्थशास्त्री फसल उत्पन्न करने हेतु इन सामग्री-संसाधनों को 'इनपुट' कहते हैं। अन्य प्रकार के उत्पादनों के लिए भी इसका प्रयोग किया जा सकता है। यहां यह बात ध्यान देने की है कि यहां मानव संसाधन एक सक्रिय स्रोत है जो इन सभी सामग्री तथा सुविधाओं का सृजन भविष्य के उत्पादन हेतु करता है। वस्तुओं तथा सुविधाओं के उत्पादन हेतु क्या आप कुछ अन्य उदाहरण सामग्री संसाधनों के दे सकते हैं? नीचे वस्तुओं तथा सुविधाओं के कुछ उदाहरण दिए गए हैं जिसके लिए आप इनपुट के रूप में सामग्री संसाधनों के उदाहरण लिख सकते हैं :

टिप्पणी

सामान व सुविधाओं के उदाहरण **आवश्यक इनपुट**

1. बिजली
2. नाई द्वारा बाल काटना
3. शिक्षक की सेवाएं
4. एक पुस्तक का प्रकाशन
5. खाद

11.4 आर्थिक संसाधन

सभी वस्तुएं तथा सेवाएं उत्पादन के पश्चात धन के रूप में परिवर्तित की जाती हैं। और इन्हें आर्थिक-संसाधन कहा जाता है। आपको जान लेना चाहिए कि आर्थिक व्यवस्था में सभी वस्तुएं तथा सेवाएं या तो स्वयं के उपयोग हेतु या बाजार में विक्रय हेतु होती हैं। अतिरिक्त मात्रा के सामान या सेवाओं को बाजार में विक्रय हेतु उपलब्ध कराया जाता है और तब इन बेची गई वस्तुओं तथा सुविधाओं के बदले में हमें धन मिलता है। ये बेचे गए सामान तथा सेवाएं जो धन के रूप में बदल जाती हैं, आर्थिक संसाधन कहलाते हैं। इसका अर्थ यह है कि जब अतिरिक्त सामान व सेवाएं अधिक होती हैं तो उससे आय अधिक हो जाती है, और हम कह सकते हैं कि देश के आर्थिक संसाधन ऊंचे हैं। इसीलिए एक देश में बाजार में विक्रय हेतु अधिक सामान और सेवाओं के उत्पादन की क्षमता, अधिक धन एकत्रित कर लेती है ओर वह देश आर्थिक रूप से अधिक मजबूत बन जाता हैं तथा विकास हेतु अधिक आर्थिक संसाधन प्रदान करता है। जो देश अधिक धन उत्पन्न करते है उन्हें अधिक उन्नत समझा जाता है और जो देश कम धन उत्पन्न करते हैं उन्हें पिछड़ा हुआ माना जाता है। यह विकास शिक्षा के क्षेत्र में भी इसी प्रकार समझा जा सकता है–अधिक संख्या में संस्थान, इन संस्थानों में अधिक भौतिक सुविधाएं, अधिक संख्या में शिक्षक आदि।

अब तक आप अधिक विकसित एवं कम विकसित देशों में अंतर समझ चुके होंगे। क्या आप उन देशों के नाम बता सकते है जिन्हें आप विकसित तथा कम विकसित समझते हैं? इन दोनों प्रकार के देशों के बीच एक और प्रकार का वर्ग रखा जा सकता है जो विकासशील देश कहलाता है। यहां पर चर्चा का विषय है–कुछ देश विकसित, कुछ विकासशील तथा कुछ कम विकसित देश क्यों हैं? यहां इन तीन प्रकार के देशों के उदाहरण दिए गए हैं। आप इस सूची में कुछ अन्य देशों के नाम जोड़ सकते हैं। यू.एन.ओ. के अधीन यूनाइटेड नेशन्स डवलप्मेंट प्रोग्राम राष्ट्रों को उनके प्रति व्यक्ति आय, मानव विकास, साक्षरता दर तथा लैंगिक समानता के आधार पर रैंक प्रदान करता है। यू एन डी पी की मानव विकास रिपोर्ट- 2011 में निम्नलिखित देशों को रैंक प्रदान किए हैं जो उनके उनके नाम साथ कोष्टक (ब्रेकिट) में लिखे गए हैं :

विकसित देश/ इकोनोमीज	विकासशील देश/ इकोनोमीज	कम विकसित देश/ इकोनोमीज
1	2	3
कनाडा (6)	ब्राजील (84)	सूडान (169)
फ्रान्स (20)	भारत (134)	लाइबेरिया (182)

स्रोत : मानव विकास रिपोर्ट–यूनाइटेड नेशन्स डवलप्मेंट प्रोग्राम (2011)

नोट : एक देश को उच्च रैंक से घटते क्रम में रैंक प्रदान किया जाता है।

कनाडा को छठा रैंक, फ्रांस को 20वां तथा लाइबेरिया को 182वां रैंक मानव विकास इंडेक्स में दिया गया है। इसका तात्पर्य है कि कनाडा और फ्रान्स में लाइबेरिया की तुलना में उच्च प्रतिव्यक्ति आय, उच्च साक्षरता दर तथा उच्च लैंगिक समानता इन्डेक्स है। कनाडा को फ्रांस की तुलना में बेहतर रैंक पर रखा गया है।

क्रियाकलाप-1

1. निम्न सूचीबद्ध देशों के बारे में मानव विकास इन्डेक्स पर सूचना एकत्रित करें। यह रिपोर्ट यू.एन.डी.पी. की वैबसाइट के होम पेज पर उपलब्ध है। यह इस इकाई के अंत में दी गई है।

   (1) जर्मनी (2) रसिया (3) अरजेन्टीना (4) चीन (5) साउथ अफ्रीका

2. उपर्युक्त देशों को आप किस वर्ग में रखना चाहेंगे?

   (अ) विकसित (ब) विकासशील (स) कम विकसित

11.5 विद्यालयों की आर्थिक सहायता हेतु आय के आर्थिक स्रोत

11.5.1 सरकार

एक राष्ट्र में प्रमुख आर्थिक स्रोत सरकार से ही प्राप्त होते हैं। जब आप सरकार की बात करते हैं तो इसके अन्तर्गत निम्न प्रकार की सरकारें आती हैं :

(1) केंद्रीय सरकार

(2) राज्य सरकार

(3) स्थानीय स्व-सरकार (स्थानीय निकाय)

टिप्पणी

भारत में संघीय प्रणाली है, जिसका अर्थ है– भारतीय संविधान के अनुसार केंद्र में एक सरकार है तथा राज्य में भी एक सरकार है। केंद्र सरकार कुछ करों, केंद्र के अधीन कार्यरत संस्थाओं से अतिरिक्त लाभ, बाहरी देशों से सहायता आदि से राजस्व (आय) प्राप्त करती है। इसी प्रकार राज्य तथा केंद्र शासित सरकारें भी संविधान के प्रावधान के अन्तर्गत राजस्व (आय) उत्पन्न करती हैं। यदि हम केंद्र व राज्य दोनों के राजस्व (आय) को मिला दें तो हम इसे सरकारी राजस्व (आय) कहते हैं। इस इकाई में हमने स्थानीय निकायों के एक वर्ग की अलग से व्याख्या की हैं। यद्यपि स्थानीय निकाय सरकार का एक अंग है परन्तु समुदाय को सेवाएं प्रदान करने में उनकी कार्यात्मक जिम्मेदारी की प्रकृति के कारण इनको अलग वर्ग में रखा गया है। इसको इस अनुभाग में बाद में वर्णित किया गया है।

यह नोट करने की बात है कि वर्तमान में संवैधानिक प्रावधान के अधीन शिक्षा समवर्ती सूची में रखा गया है। इसका अर्थ यह है कि केंद्र तथा राज्य दोनों सरकारें शैक्षिक सेवाओं तथा संस्थाओं के लिए नियम बनाते हैं और नियंत्रण रखते हैं। केंद्र तथा राज्य दोनों सरकारें इन संस्थाओं को चलाने के लिए धन प्रदान करती हैं। सरकारी संस्थाओं को धन प्रदान करने तथा नियंत्रण रखने का काम सरकार करती है। सरकार से सहायता प्राप्त शैक्षिक संस्थाओं को ग्रांट इन एड के नियमों के तहत धन की सहायता प्रदान की जाती है। आजकल कई विद्यालय, महाविद्यालय, ऐसे हैं जो निजी असहायता प्राप्त संस्थाओं के नाम से जाने जाते हैं। इन संस्थाओं को निजी असहायता प्राप्त संस्थाएं कहा जाता है। इन संख्याओं की स्थापना निजी निकायों, संगठनों, ट्रस्ट, समितियों तथा व्यापार मंडलों के द्वारा की गई है। सरकार इस प्रकार की संस्थाओं की स्थापना को प्रोत्साहित करती है। आप क्या सोचते हैं? सरकार इन संस्थाओं की स्थापना को क्यों प्रोत्साहित कर रही हैं?

11.5.2 अन्य संस्थाएं

भारत में शिक्षा का प्रसार हो रहा है। सरकार (केंद्र व राज्य सरकार) शहरों में शिक्षा की सुविधाओं को अकेले ज्यादा मात्रा में प्रदान नहीं कर सकती। भारत एक बहुत विशाल देश है। देश के प्रत्येक कोने में नए विद्यालय खोल कर प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने के बारे में सोचिए। शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009, 1 अप्रैल 2010 से लागू हो चुका है। 6 से 14 वर्ष के सभी बच्चों को अनिवार्य रूप से विद्यालय सुविधाएं प्रदान की जाती हैं। कक्षा I से VIII तक की कक्षाओं के लिए विद्यालय, प्रदान करने हेतु हमें जमीन की आवश्यकता है, साथ ही शिक्षकों तथा अन्य सुविधाओं की भी। सरकार इन परिस्थितियों में अधिक मात्रा में धन का अकेले वहन नहीं कर सकती। ऐसी स्थिति में सरकार अन्य संस्थाओं से धन की सहायता चाहती है। वर्तमान समय में बहुत से स्थानीय निकाय, संगठन, ट्रस्ट, समितियां, व्यापार मंडल और कुछ विदेशी संस्थाएं देश में प्राथमिक विद्यालय स्थापित करने में सरकार की सहायता कर रही है। विद्यालयों को इन संस्थाओं द्वारा विद्यालय भवन, सुविधाएं, शिक्षकों का वेतन, पुस्तकें आदि पर व्यय हेतु धन की सहायता मिलती है।

टिप्पणी

क्रियाकलाप-2

1. आप एक विद्यालय में शिक्षक है। आपके विद्यालय में किस प्रकार का प्रबंधन है?

   (i) सरकारी

   (ii) सरकारी सहायता प्राप्त

   (iii) निजी असहायता प्राप्त

2. अपने विद्यालय में आय के स्रोतों को चिन्हित कीजिए। इनको दिए गए बजट शीर्षकों के आधार पर वर्गीकृत कीजिए।

   ....

   ....

   ....

11.5.3 स्थानीय निकाय

स्थानीय निकायों के अंतर्गत आते हैं–(i) नगर पालिका परिषद/कमेटी-शहरी क्षेत्रों में, (ii) जिला परिषद-ग्रामीण क्षेत्रों में (iii) ग्राम पंचायत-गांवों में।

लोकतांत्रिक भारत में तीन स्तरीय सरकारी प्रणाली है–केंद्र में केंद्रीय सरकार, राज्य स्तर पर राज्य सरकार तथा जिला स्तर पर जिले के शहरी क्षेत्र में नगर पालिका परिषद/कमेटी और ग्रामीण क्षेत्र में जिला परिषद ग्रामीण क्षेत्रों में जिला परिषद के नीचे ब्लाक तथा तालुका हैं। ग्रामीण स्तर पर ग्राम पंचायत हैं। परन्तु ब्लाक/पंचायत जिला मजिस्ट्रेट द्वारा शासित होते हैं। राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में ब्लाक तथा पंचायत के नाम अलग भी हो सकते हैं। परन्तु शासन को सुचारू रूप से चलाने के लिए जिले का वर्गीकरण किया गया है।

नगरपालिका/जिला परिषदों को स्थानीय निकाय कहा जाता है। इन स्थानीय निकायों के विशेष कार्यात्मक उत्तरदायित्व होते हैं। उदाहरण के लिए ये निकाय नागरिक सुविधाएं प्रदान करते हैं। पानी, बिजली, सड़क, शिक्षा तथा स्वास्थ्य सेवाएं आदि। गांवों के विकास हेतु सभी फंड जिला प्रशासन को भेजे जाते है जो इसे ब्लाक विकास अधिकारी के पास तथा यहां से यह फंड ब्लाक समिति तथा उसके बाद ग्राम पंचायत तक स्थानान्तरित किया जाता है। विकास-निधि (फंड) के वितरण की यह एक विकेंद्रीकृत व्यवस्था है तथा गांव का समुदाय इस निधि का उपयोग ग्राम पंचायत के सीधे नियंत्रण में करता है।

अपने मोहल्ले में स्थानीय निकाय द्वारा संचालित एक विद्यालय का केस अध्ययन निम्नलिखित को ध्यान में रखकर तैयार कीजिए:

टिप्पणी

क्रमांक	विद्यालय व्यय के शीर्षक	आय के स्रोत
1		
2		
3		
4		
5		
6		
	कुल योग :	

समुदाय से स्वैच्छिक योगदान

भारतीय समाज की एक परम्परा है कि समुदाय स्वेच्छा से समाज की भलाई हेतु योगदान करता है। धर्मशाला, पंचायत घर, धार्मिक स्थान (मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, चर्च) विद्यालय स्वास्थ्य केंद्र आदि स्वैच्छिक योगदान है जो (i) मुफ्त श्रमिक, इमारतों के निर्माण हेतु (ii) सामग्री के रूप में योगदान (iii) धन (iv) मुफ्त भूमि आदि से प्राप्त होता है। अपने इलाके में आप इस प्रकार का स्वैच्छिक योगदान देख सकते हैं। यह एक अच्छी तथा उदार प्रयास है जो एक अच्छे कार्य हेतु समाज का लगाव तथा स्वामित्व की भावना को प्रदर्शित करता है। यह एक छोटा सा योगदान हो सकता है परन्तु एक अच्छे कार्य के लिए बहुत से लोग योगदान करते हैं। साथ ही यह बहुत महत्त्व रखता है।

11.5.4 एनडावमेंट (दान)

एनडावमेंट एक 'कोष निधि' है जिसमें एक परिवार, व्यक्ति, ट्रस्ट/समाज एक विशेष या सामान्य उद्देश्य हेतु दान देता हैं। इस दान के पीछे किसी संस्था को अच्छे सामाजिक कार्य हेतु परोपकार की भावना है। भारतीय संदर्भ में शैक्षिक संस्थाएं, विद्यालय, कालेज इस प्रकार का दान प्राप्त कर रही हैं। यह धन एकत्रित करने का अच्छा प्रयास है। विशेष उद्देश्यों के कार्य में व्यय हेतु इस प्रकार के दान पर लगने वाले ब्याज द्वारा एक संस्था को लगातार आय प्राप्त होती है। मेरिट छात्रवृत्ति (विशेष कार्य) या विद्यालय भवन का रखरखाव (सामान्य उद्देश्य) परन्तु अब दान द्वारा आय कम हो रही है। वर्तमान में परिवार अपने स्वयं की संस्थाओं को स्थापित करने लगे हैं।

11.5.5 बचत

व्यय के एक विशेष शीर्षक के अंदर खर्च के पश्चात बचे अतिरिक्त धन को बचत कहा जाता है। विद्यालय में फंड ब्लाक ग्रान्ट के रूप में समय-समय पर प्राप्त होते हैं परन्तु व्यय तभी होते

टिप्पणी

हैं जब गतिविधि या कार्यक्रमों का आयोजन होता है। ब्लाक ग्रांट के रूप में प्राप्त फंड को डाक घर या बैंक में जमा किया जाता है। इस धन पर ब्याज तथा अतिरिक्त धन द्वारा विद्यालयों के अन्य कार्यों को सम्पन्न करने में सहायता मिलती है। परन्तु यह बचत आय की न्यायसंगत स्रोत होता है और धन की कमी को पूरा करने में समायोजित होती है। अर्थात् आय से अधिक व्यय के समायोजन में। आजकल विद्यालयों में इमारत बनाने तथा अन्य सिविल कार्यों हेतु ब्लाक ग्रान्ट्स प्राप्त होती हैं। इमारत बनने में समय अधिक लगता है, इसलिए बचत की संभावना सदैव बनी रहती है।

एक सरकारी सहायता प्राप्त स्कूल या स्व-वित्तीय निजी असहायता प्राप्त विद्यालय में भी इस प्रकार की बचत हो सकती है। विद्यालय प्रबंधन के पास व्यय से अधिक आय के कारण बचत होती है। इन संस्थाओं के पास आय के स्रोत अधिक होते हैं। बचत किसी विद्यालय के मजबूत वित्त को प्रदर्शित करते हैं। इन्हें विद्यालय विकास की गतिविधियों के लिए उपयोग में लाया जा सकता है।

11.5.6 परीक्षा शुल्क तथा अन्य शुल्क

सरकार द्वारा चलाए जा रहे प्राथमिक तथा उच्च प्राथमिक विद्यालय विद्यार्थियों से किसी प्रकार का शुल्क नहीं लेते। परन्तु सरकारी सहायता प्राप्त तथा निजी असहायता प्राप्त विद्यालय विद्यार्थियों से विभिन्न प्रकार के शुल्क होते हैं। ये शुल्क निम्न प्रकार के हो सकते हैं:

(1) ट्यूशन फीस

(2) परीक्षा शुल्क

(3) कम्प्यूटर फीस

(4) प्यूपिल फंड आदि।

सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालय इन शुल्कों को सरकार द्वारा समय-समय पर निश्चित की गई धनराशि के रूप में विद्यार्थियों से लेते हैं। ये विद्यार्थियों की कक्षा के आधार पर निश्चित किए जाते हैं। प्राथमिक स्तर पर ये शुल्क कम हैं और उच्च प्राथमिक स्तर से अधिक हैं। माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी विज्ञान शुल्क भी देते हैं। विद्यालय में पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के आयोजन हेतु भी विद्यार्थियों से क्रियाकलाप शुल्क लिया जा सकता है। इसके पीछे विद्यालय बजट की विद्यालय कार्यक्रमों के लिए क्षतिपूर्ति करने का विचार है। सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों को सहायता ग्रांट 'घाटा आधारित सिद्धान्त' (डेफिसिट-बेस प्रिन्सिपल) के आधार पर दी जाती है। अर्थात विद्यालयों को सहायता ग्रांट उनके प्रबंधन द्वारा इन शुल्कों से तथा अन्य स्रोतों से एकत्रित की गई आय को घटा कर दी जाती है। ये शुल्क सामान्यतया सरकार द्वारा तय किए जाते हैं। निजी असहायता प्राप्त विद्यालयों में ये शुल्क सदैव सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों से अधिक होते हैं। ऐसा क्यों? ऐसा इसलिए होता है क्योंकि ये विद्यालय सरकार से किसी प्रकार की सहायता-ग्रांट प्राप्त नहीं करते। ये विद्यालय अपने सभी व्ययों का वहन इन शुल्कों की आय द्वारा करते हैं। इन विद्यालयों को अन्य प्रकार के शुल्क विद्यार्थियों से लेने की अनुमति भी होती है। उदाहरण के लिए विद्यार्थियों को कक्षा में प्रवेश के समय 'प्रवेश शुल्क' देना पड़ता है। कभी-कभी यह कक्षा I में प्रवेश के समय या अन्य स्तर पर प्रवेश के समय जैसे-प्राथमिक से उच्च प्राथमिक, उच्च प्राथमिक से माध्यमिक या उच्च माध्यमिक स्तर पर

टिप्पणी

प्रवेश शुल्क देना पड़ता है। विद्यालय प्रबंधन कभी-कभी विद्यालय विकास शुल्क भी विद्यार्थियों से लेता है जो सामान्यत: वार्षिक आधार पर लिया जाता है। विद्यालय विकास शुल्क विद्यार्थियों से भौतिक सुविधाओं के प्रावधान हेतु आय एकत्रित करने के लिए प्राप्त किया जाता है। उदाहरण के लिए–अतिरिक्त कक्षा-कक्ष, पुस्तकालय हेतु पुस्तकें खरीदना विज्ञान प्रयोगशाला, फर्नीचर, कम्प्यूटर सुविधाएं, जिम्नाजियम, खेल के मैदान, बिजली की फिटिंग, पीने के पानी की सुविधा, विद्यालय औडीटोरियम आदि।

यह कहा जा सकता है कि निजी असहायता प्राप्त विद्यालय विद्यार्थियों से ली गई फीस द्वारा आय का अधिकांश भाग प्राप्त करते हैं। आय का यह स्रोत विद्यालयों को उनके नियमित व्यय-शिक्षक तथा अन्य स्टाफ का वेतन तथा अन्य कार्यक्रमों के व्यय को वहन करने में सहायक है। इसीलिए ये विद्यालय–सरकारी तथा सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों की तुलना में पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के अधिक कार्यक्रम आयोजित करने की स्थिति में होते हैं। क्योंकि अभिभावक अधिक शुल्क का भुगतान करते हैं, इसलिए इन विद्यालयों का उत्तरदायित्व बढ़ जाता है।

अभिभावक शिक्षक संघ या मातृ-शिक्षक संघ की जल्दी-जल्दी गोष्ठियों के आयोजन से विद्यालय विकास कार्यक्रमों तथा विद्यार्थियों की पाठ्यक्रम, पाठ्य-सहगामी तथा अतिरिक्त पाठ्य-गतिविधियों में प्रगति की चर्चा करने का अवसर मिलता है। यह विद्यालय का उस समुदाय के प्रति जिसके लिए वह कार्य कर रहा है उत्तरदायित्व निर्वाह करने का स्वस्थ प्रयास है।

11.6 सारांश

इस इकाई में आपने संसाधनों के प्रकार-मानवीय, सामग्री तथा वित्तीय के महत्त्व को समझा जो विद्यालय कार्यक्रमों को संचालित करने के लिए आवश्यक है। वित्तीय संसाधनों के अर्न्तगत आपने विभिन्न प्रकार की आय जो विद्यालय प्रबंधन द्वारा प्राप्त की जाती है के विषय में सीखा। ये संसाधन विभिन्न संस्थाओं द्वारा प्रदान किए जाते हैं। जैसे–सरकार, प्रदत्त संस्थाएं, स्थानीय निकाय, समुदाय से स्वैच्छिक योगदान तथा दान आदि।

जब कभी विद्यालयों की आय उनके व्यय से अधिक हो जाती है तो वे बचत के रूप में अतिरिक्त आय को रखते हैं। विद्यालय प्रबंधन द्वारा इस अतिरिक्त धन को डाकघर या बैंक में रखा जाता है तथा इस धन पर ब्याज प्राप्त होता है। इस धन को विद्यालय विकास के कार्यक्रमों के लिए उपयोग में लाया जा सकता है। सामान्यत: इस प्रकार की 'आतरिक्त आय' (बचत) सरकारी सहायता प्राप्त या निजी असहायता प्राप्त विद्यालयों में एकत्रित की जाती है जो अतिरिक्त निधि, दान, समुदाय द्वारा स्वैच्छिक योगदान, या शुल्क द्वारा प्राप्त की जाती है। सरकारी विद्यालयों में ऐसी स्थिति नहीं होती क्योंकि प्रत्येक स्तर हेतु शुल्क तथा सभी व्यय सरकार द्वारा नियमित किए जाते हैं। सरकार सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शुल्क को भी नियमित करती है। परन्तु निजी असहायता प्राप्त विद्यालय अधिक शुल्क लेते हैं और उनकी आय का मुख्य स्रोत शुल्क ही होता है। शिक्षा के विस्तार एवं प्रोन्नति हेतु निजी भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए सरकारी नियमावली इन विद्यालयों के लिए लचीली रखी जाती है।

टिप्पणी

11.7 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

United Nations Development Programme (UNDP) Human Development Report -2011,webpage link http://hdr.undp. Org/en/statistics/

11.8 अन्त्य इकाई अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. स्थानीय निकाय द्वारा संचालित एक विद्यालय के गुण तथा कमियों के पांच बिंदु बताइए।

2. निजी असहायता प्राप्त विद्यालयों के विद्यालय कलेंडर पर एक टिप्पणी लिखिए। यह एक सरकारी तथा सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालय से किस प्रकार भिन्न है? भिन्नता के केवल पांच बिंदु बताइए।

3. आप अपने विद्यालय जहां आप कार्यरत हैं, के संपूर्ण विकास हेतु आवश्यक मानव संसाधन प्रबंधन के लिए क्या सुझाव (पांच दृढ़ एवं व्यवहारिक) देंगे?

4. आपके विद्यालयी कार्यों में स्थानीय निकाय द्वारा दिए जा रहे सहयोग और सहायता की एक सूची बनाएं। संक्षिप्त तथा बुलेट फारमेट में उत्तर दीजिए जैसे–

   - यह विद्यालय से बाहर रहने वाले बच्चों को विद्यालय लाने में मदद करता है।
   - ....
   - ....

5. अधिगम स्रोतों की एक सूची बनाएं : (प्रिंट, वीडियो, ओडियो आदि) जो इस इकाई के लिए उपयुक्त अतिरिक्त अधिगम स्रोत सामग्री के रूप में शामिल की जा सके।

टिप्पणी

इकाई–12 विद्यालय और समुदाय - सहभागिता प्रबंधन के उपागम

संरचना

12.0 प्रस्तावना

पिछली इकाई में मानव संसाधन की चर्चा उत्पादन के एक महत्त्वपूर्ण अंग के रूप में की गई थी। आप भली प्रकार जानते हैं कि व्यक्तियों की शिक्षा और प्रशिक्षण उनके परिवार, समुदाय, समाज तथा राष्ट्र की आय बढ़ाते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि शिक्षा और प्रशिक्षण को एक निवेश के रूप में समझा जा सकता है। व्ययशील मशीनरी की भांति शिक्षा से यह अपेक्षा की जाती है कि जो शिक्षा एवं प्रशिक्षण में निवेश करते हैं, यह बदले में उनके लिए लाभ अर्जित करे। इस इकाई में आप सीखेंगे कि विद्यालय (शैक्षिक संस्थाओं के रूप में) तथा उनके प्रबंध न को समुदाय के निकट तथा समुदाय को विद्यालयों के निकट किस प्रकार लाया जा सकता

है। विद्यालय एक सामाजिक संस्था है। इसीलिए विद्यालय और समुदाय की सहभागिता को सुदृढ़ बनाया जा सकता है। शिक्षा और प्रशिक्षण समुदाय को लाभ पहुंचाते हैं। शिक्षा का केवल आर्थिक मूल्य ही नहीं है, बल्कि इसका सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्य भी है।

अधिगम उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप इस योग्य हो जाएंगे कि–

- विद्यालय और समुदाय सहभागिता के प्रबंधन की अवधारणा की व्याख्या कर लेंगे।
- प्रबंधन उपागमों के प्रकारों का वर्गीकरण कर लेंगे–जैसे–

  (अ) मानव-शक्ति आवश्यकता

  (ब) मूल्य-लाभ विश्लेषण

  (स) सामाजिक मांग

  (द) सामाजिक न्याय
- विद्यालय-समुदाय सहभागिता के प्रत्एक उपागम के औचित्य की चर्चा कर लेंगे।
- विद्यालय समुदाय सहभागिता को सुदृढ़ बनाने की प्रक्रिया की व्याख्या कर लेंगे।

12.2 प्रबंधन उपागम

12.2.1 अर्थ

एक राष्ट्र की 18-65 आयु वर्ग की कार्यरत जनसंख्या को वहां की मानव-शक्ति माना जा सकता है। साक्षर मानव-शक्ति एक संपत्ति होती है। चीन, जापान, अमेरिका, जर्मनी तथा अन्य देशों की कार्यरत जनंसख्या के बारे में सोचें जो नई तकनीकी की सहायता से संपत्ति एकत्रित कर रहे हैं। आप देखते हैं कि भारत में किस प्रकार सर्व-शिक्षा अभियान के माध्यम से 6-14 वर्ष के सभी बच्चों को विद्यालय भेजने का अभियान चल रहा है। आप इन बच्चों को पढ़ाने में अपने कर्तव्य का निर्वाह कर रहे हैं। जिससे शिक्षित होने के बाद बच्चे कुछ व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त कर अपने लिए धन अर्जन की क्षमता को सुधार सकें। अपने राज्य में विद्यालयी सुविधाओं के बारे में सोचें। क्या बीते वर्षों में इनमें विस्तार हुआ है?

अपने आस-पास अपने पिता, पूर्वज या ग्राम समुदाय के शैक्षिक स्तर के बारे में सोचें। परिस्थितियां बदल चुकी हैं। शिक्षा का विस्तार हो रहा है। प्राथमिक पास करके, उच्च प्राथमिक, उच्च प्राथमिक से माध्यमिक तथा माध्यमिक से उच्चतर माध्यमिक तक बच्चे पहुंचते हैं। इस प्रकार वे सीढ़ी-दर सीढ़ी शिक्षा की ऊंचाई पर चढ़ते हैं।

टिप्पणी

इसलिए मानव-शक्ति को शिक्षित करना अब एक घरेलू कार्य नहीं है, परन्तु सरकार तथा स्थानीय निकायों की संलग्नता दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। यह केवल वांछनीय ही नहीं बल्कि आवश्यक भी है। शिक्षा को जीवन-पर्यन्त चलने वाला अधिगम माना जाता है क्योंकि प्रतिदिन नवीन ज्ञान व नवीन कौशल का अर्जन हो रहा है। प्रौद्योगिकी शिक्षा की मांग बढ़ रही है। कम्प्यूटर शिक्षा दूर-दराज के शहरों तक पहुंच रही है। शिक्षा और प्रशिक्षण क्यों? यह इसलिए कि जिनके पास शिक्षा और प्रशिक्षण है। उनके द्वारा भिन्न (उच्च) आय प्राप्त होती है, जिनके पास यह नहीं है, उन्हें कम आय प्राप्त होती है।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि आधुनिक संसार में परिवार, समुदाय, समाज तथा सरकार का नजरिया बदल चुका है। ये सभी संस्थाएं सोचती हैं कि शिक्षा एवं प्रशिक्षण के अवसरों का प्रावधान देश के प्रत्येक कोने तक करना आवश्यक है। प्रतियोगिताओं में बृद्धि, उत्पादन की नई विधियां, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी का उपयोग, परिवार में बेहतर रहन-सहन की आकांक्षा आदि के लिए यह आवश्यक है कि परिवार के प्रत्येक कार्यकारी सदस्य को शिक्षित तथा प्रशिक्षित किया जाय। शिक्षा एवं प्रशिक्षण के बिना भविष्य अनिश्चित है और प्रेरणाहीन है। अब प्रश्न उठता है कि शिक्षा एवं प्रशिक्षण तथा इसके विस्तार का प्रबंधन कैसे किया जाय? मानव शक्ति विशेषज्ञ तथा अर्थशास्त्रियों ने अपने शोध के द्वारा शैक्षिक नियोजन हेतु मानव-शक्ति उपागम को संस्तुत तथा सुझाया है। इन उपागमों की चर्चा हम अधिक तकनीकी क्षेत्रों में न जाकर करते हैं।

12.2.2 प्रकृति और क्षेत्र

सन् 1960 में शल्ट्ज ने एक विचार प्रस्तुत किया जो 'ह्यूमन कैपिटल थ्योरी एप्रोच' के नाम से जाना जाता है। इस उपागम के मुख्य बिंदु निम्नलिखित हैं–

(1) अधिगम प्रक्रिया के परिणाम स्वरूप उत्पादक संसाधन का एक नया रूप प्राप्त होता है जो मानव पूंजी (ह्यूमन कैपिटल) कहलाता है।

(2) शिक्षा में व्यय करना एक निवेश हैं जो भविष्य में मानव पूंजी तथा भौतिक पूंजी दोनों की रचना करता है।

(3) अधिगम प्रक्रिया की तुलना एक उद्योग में उत्पादन की प्रक्रिया से की जा सकती है।

(4) शिक्षा एवं प्रशिक्षण में अंतर के कारण में आय में अंतर होता है और इससे श्रमिक की उत्पादकता और दक्षता सीमित हो जाती है। सीमित उत्पादकता का अर्थ है–कम शिक्षा तो कम उत्पादकता तथा अतिरिक्त शिक्षा और प्रशिक्षण के फलस्वरूप अतिरिक्त उत्पादन।

शिक्षा और प्रशिक्षण की व्यक्तिगत/नीजी मांग (घरेलू मांग) निम्नलिखित बातों पर निर्भर करती है–

- स्वैच्छिक शिक्षा के मूल्य में परिवर्तन
- शिक्षा के लिए व्यक्तिगत परिवारों की प्राथमिकता

टिप्पणी

- परिवार की आय: यदि परिवार की आय अधिक हो तो उनकी शिक्षा पर खर्च करने की क्षमता अधिक होगी और आय कम हो तो शिक्षा पर व्यय करने की क्षमता कम होगी।
- निवेश के विभिन्न अवसरों से लाभ की अपेक्षा– (शिक्षा एवं प्रशिक्षण या अन्य क्षेत्रों में धन के निवेश से अधिक या कम अपेक्षित लाभ)

परन्तु बाद में इस 'ह्यूमन कैपिटल माडल' के मानव शक्ति उपागम की आलोचना हुई। इसका कारण यह है कि शोध द्वारा यह पता लगा कि देश में बाजार तथा वास्तविक जीवन-परिस्थितियों में संपत्ति वितरण तथा घरेलू आय शिक्षा एवं प्रशिक्षण के वितरण के अनुसार नहीं होते। विद्यालयी शिक्षा से प्राप्त आय के स्रोत तथा लाभ, शिक्षा एवं प्रशिक्षण के स्तर से मेल नहीं खाते। संपत्ति के वितरण में समाज के कुछ अन्य कारक भी प्रभाव डालते हैं। अन्यथा उन दो परिवारों का आर्थिक स्तर लगभग एक समान होता जिनका शिक्षा एवं प्रशिक्षण का स्तर एक समान है। इसका तात्पर्य है कि देश की प्रणाली में कुछ अन्य कारक हैं जो संपत्ति वितरण में असमानता उत्पन्न कर रहे हैं। ये कारण सामाजिक-प्रकृति या राजनैतिक दबाव के हो सकते हैं।

कुछ अर्थशास्त्रियों ने इन सामाजिक तथा राजनैतिक दबावों को एक राष्ट्र की आर्थिक संरचना के रूप में देखा है। थ्रो (thurow) (1972) के अनुसार-आय का वितरण, व्यवसाय के अवसरों द्वारा सुनिश्चित होता है, न कि एक विशेष रूप से शिक्षित एवं प्रशिक्षित मजदूरों की पंक्ति द्वारा। देश में व्यवसाय एवं मजदूरों की मांग व्यवसाय के अवसरों द्वारा इंगित होती है। मांग की पूर्ति हेतु शिक्षित एवं प्रशिक्षित मजदूरों की संख्या, मजदूरों की आपूर्ति को प्रदर्शित करती है। शिक्षा एवं प्रशिक्षण के स्तर के अनुसार व्यवसाय के अवसर प्रदान किए जाते हैं। थ्रो के अनुसार व्यवसाय वितरण तीन कारणों पर आधारित होता है–

1. प्रौद्योगिकी-प्रगति की विशेषताएं
2. मजदूरी सुनिश्चित करना जो व्यापार मंडल तथा देश में मजूदरी में अंतर की प्रथा पर आधारित है।
3. नियुक्तिकर्ता तथा कार्यकर्ताओं के बीच प्रशिक्षण मूल्य का वितरण

थ्रो ने सरकार को एक सुचिन्तित वेतन–नीति की संस्तुति की है जिसमें कार्य विशेषताएं तथा उसकी संरचना को परिवर्तित करना (मांग से व्यवसाय अवसरों तक) एक सफल उपकरण माना गया है। इसके द्वारा मजदूर आपूर्ति की अपेक्षा आय की असमानता को कम किया जा सकता है। इसीलिए देश में मानव-शक्ति के प्रबंधन का उपागम अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। महत्त्वपूर्ण मुद्दे जैसे-आर्थिक संरचना, कार्य-विशेषताएं, प्रौद्योगिक प्रगति, व्यापार संगठनों की भूमिका, उपयुक्त प्रकार की शिक्षा एवं प्रशिक्षण एवं आवश्यक कौशल, मजदूर कानून एवं मजदूरी, जन-स्वास्थ्य रक्षा हेतु निवेश, श्रमिकों की अधिक आपूर्ति पर नियंत्रण आदि की मानीटरिंग लगातार होनी चाहिए। यह मानव शक्ति के प्रबंधन और बढ़ते हुए व्यवसाय अवसरों हेतु मानव शक्ति की मांग एवं आपूर्ति को नियंत्रित करने में सहायक होगा। आवश्यकता से अधिक श्रमिकों की आपूर्ति से व्यवसाय में प्रवेश-स्तर पर आवश्यक योग्यता में बढ़ोतरी करनी पड़ती है। परिणाम स्वरूप श्रमिकों की मांग एवं आपूर्ति के बीच मेल नहीं होता। पूरी संभावना होती है कि निम्न व्यवसायों

टिप्पणी

के लिए उच्च शैक्षिक एवं प्रशिक्षण योग्यता के व्यक्ति प्रतियोगिता में सफल हो जाएं। बाजार में इस प्रकार की स्थिति शिक्षा एवं व्यवसायिक प्रशिक्षण में गलत निवेश को संकेत देती है। ऐसा नहीं होना चाहिए।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि शिक्षा एवं प्रशिक्षण एक व्यक्ति को अपेक्षित धन नहीं दे सकती परन्तु यह एक व्यर्थ व्यय नहीं हो सकता क्योंकि एक शिक्षित व्यक्ति स्वयं के लिए, अपने परिवार के लिए और समाज के लिए महत्त्वपूर्ण निधि है। निम्नलिखित क्रिया-कलाप को लेकर आप स्वयं की पहचान करें–

क्रियाकलाप-1

(1) अपने आस-पास के 10-15 घरों का सर्वेक्षण करें तथा उनके कार्यरत सदस्यों के व्यावसायिक स्तर का अध्ययन उनके शैक्षिक स्तर के साथ करें। शैक्षिक स्तर को दो भागों में बांटे–(1) सामान्य शिक्षा (2) प्रशिक्षण

(2) क्या आपने कार्यरत सदस्यों की आय में उनके शैक्षिक स्तर के संदर्भ में कोई अंतर पाया? यदि हां तो आय में अंतर के इन कारणों को पहचानिए।

क्या घर की आय में ये अंतर शिक्षा तथा प्रशिक्षण के प्रकार व स्तर के कारण है या अन्य कारकों के कारण।

शैक्षिक एवं व्यावसायिक स्तर और घर के कार्यरत सदस्यों की आय

घर का क्रमांक	घर के कार्यरत सदस्यों की संख्या	कार्यरत सदस्यों की आयु	कार्यरत सदस्यों का शैक्षित स्तर	प्रशिक्षण	कार्यरत सदस्यों का व्यवसाय	कार्यरत सदस्यों की वार्षिक आय रु.
घर न. 1	1 2 3 4					
घर न. 2	1 2 3 4					
घर न. 3	1 2					

टिप्पणी

	3					
	4					
घर न.	1					
4	2					
	3					
	4					

नोट : समुदाय में अपनी सुविधा के अनुसार 10-17 घरों का अध्ययन करें। उपर्युक्त तालिका मात्र कालम्स प्रदर्शित करती है। आप घरों की संख्या के अनुसार पंक्तियां बढ़ा सकते हैं।

2. परिवार हेतु धन कमाने वाले प्रत्येक कार्यरत सदस्य की सूचना एकत्रित करें (कालम 2)

3. शिक्षा से तात्पर्य है : (i) साक्षर (ii) प्राथमिक पास (iii) प्रारम्भिक शिक्षा पास (iv) माध्यमिक पास (IX) और (X), (v) उच्चतर माध्यमिक पास (XI) और (XII) (vi) डिग्री (स्नातक) (vii) स्नातकोत्तर तथा उससे अधिक (कॉलम 4)

4. प्रशिक्षण का अर्थ है : एक विशेष ट्रेड के लिए व्यावसायिक और प्रौद्योगिक प्रशिक्षण। जैसे: मशीन, ड्राफ्ट मैंन, पटवारी, बिजली, कार्यकर्ता, प्लम्बर, शिक्षक, इंजीनियर, फार्मासिस्ट, डाक्टर, नर्स आदि (कॉलम 6) प्रशिक्षण योग्यता को प्रशिक्षण-स्तरों के अनुसार लिखना चाहिए। (i) सर्टिफिकेट कोर्स (ii) डिप्लोमा कोर्स (iii) डिग्री कोर्स आदि। (कॉलम 5 में)

   एकत्रित आंकड़ों से सूचना/निष्कर्ष निकालें।

   (i) क्या साक्षर व शिक्षित व्यक्ति निरक्षरों से अधिक धन कमा रहे हैं?

   (ii) क्या कार्यरत सदस्यों की आय उच्च शिक्षा के कारण बढ़ती है? कालम 4 के साथ आय की तुलना करें।

   (iii) क्या कार्यरत सदस्यों की आय व्यावसायिक शिक्षा (प्रशिक्षण) के कारण बढ़ती है? (कार्यरत सदस्य की वार्षिक आय की तुलना कालम (5) के साथ करें।

   (iv) कार्यरत सदस्य का कौन सा ट्रेड या व्यवसाय अधिक आय देता है?

   (v) क्या कार्यरत सदस्य की आय उम्र के साथ बढ़ती है?

12.3 प्रबंधन उपागमों के प्रकार

शैक्षिक नियोजन की दृष्टि से यहां चार मुख्य उपागमों को दिया गया है। साहित्य में दिए गए सैद्धान्तिक सूत्रों की चर्चा उनकी तकनीकियों के साथ की गई है।

टिप्पणी

12.3.1 मानव शक्ति आवश्यकता

इस उपागम के अनुसार शैक्षिक योजनाएं देश में मानव शक्ति की आवश्यकता या आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखकर बनाई जाती है। सामग्री तथा सेवाओं के उत्पादन हेतु श्रमिकों की आवश्यकता होती है। इनके लिए सामान्य शिक्षा या विशेष कौशलों की आवश्यकता हो सकती है। जब उत्पादन प्रक्रिया सरल होती है तो शिक्षा व कौशलों की आवश्यकता भी सरल/सामान्य हो सकती है। जब उत्पादन प्रक्रिया जटिल होती है तो सामान्य शिक्षा के उच्च स्तर तथा कौशलों की आवश्यकता होती है जिसमें विशेष प्रशिक्षण की जरूरत होती है। उदाहरण के लिए कम्प्यूटर उद्योग में हार्डवेयर भागों का उत्पादन, मोबाइल फोन और दवाइयों के उत्पादन हेतु श्रमिकों को न केवल उच्च स्तर की सामान्य शिक्षा परन्तु विशिष्ट प्रकार के कौशलों की आवश्यकता होती है जो विशेष प्रशिक्षण द्वारा प्राप्त किए जा सकते हैं। इसलिए शैक्षिक नियोजनकर्ता विभिन्न आर्थिक क्षेत्रों में उत्पादन प्रक्रिया हेतु अपने विशेष ज्ञान व पारंगतता के उपयोग द्वारा मानव-शक्ति की आवश्यकता पर कार्य करते हैं। जैसा पहले कहा गया है, आज का विश्व पूरी तरह से प्रौद्योगिकी तथा प्रतियोगिता पर आधारित है, अतः एक देश में अधिक उत्पादन तथा संपत्ति हेतु कार्यरत जनसंख्या का शैक्षिक और व्यावसायिक स्तर वहां की मानव-शक्ति आवश्यकता के अनुसार होना चाहिए। मानव-शक्ति की भावी आवश्यकता की पूर्ति हेतु देश के युवाओं को शिक्षा एवं प्रशिक्षण देना आवश्यक है ताकि वे भविष्य की चुनौतियों को सामना कर सकें। इस प्रकार मानव-शक्ति आवश्यकता उपागम शिक्षा और प्रशिक्षण के स्तरों को विभिन्न प्रकार व स्तरों के व्यवसायों से जोड़ने का काम करता है।

12.3.2 मूल्य-लाभ विश्लेषण

यह माना जाता है कि अधिक वर्षों की शिक्षा तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण व्यक्ति तथा समाज दोनों की जागरूकता, कौशल तथा समझ में वृद्धि करते हैं। अब वे दिन समाप्त हो चुके हैं जब शिक्षा को उच्च वर्ग का ही अधिकार समझा जाता था। आज शिक्षा को उत्पादक निवेश समझा जाता है। आर्थिक क्षेत्र में तकनीकी विकास तथा तीव्र विकास के कारण विभिन्न प्रकार की मानव-शक्ति की आवश्यकता होती है जिससे आज शिक्षा की मांग बढ़ गई है।

मूल्य-लाभ की अवधारणा

एक विशेष-सामग्री या सुविधा का उत्पादन दसरी सामग्री या सुविधा की कीमत पर किया जाता है। चुने हुए विकल्प की प्राप्ति हेतु एक विकल्प का त्याग करना पड़ता है। परिवार अपने बच्चों को विद्यालय भेजते हैं। वे शुल्क तथा कर का भुगतान करते हैं। वे शिक्षा के खरीददार हैं। ये परिवार अपने सदस्यों को विद्यालय भेजकर अपनी आय में कमी भी करते हैं। पहले प्रकार का व्यय परिवारों के लिए सीधा मूल्य है तथा दूसरा प्रकार 'अवसर-मूल्य' कहलाता है। शिक्षा विभाग में वेतन, रख-रखाव हेतु धन, भंडारों की आपूर्ति, गिरावट आदि पुनः समुदाय के लिए संसाधन मूल्य हैं। यहां भी कहीं अन्य स्थान पर निवेश के बजाय शिक्षा प्रदान करने में 'अवसर' एक निवेश बन जाता है। व्यक्ति को शिक्षा कम मूल्य पर सरकार द्वारा प्रदान का जाती है जबकि शैक्षिक संस्थाओं को संचालित करने में सरकार का अधिक व्यय होता है। इसका तात्पर्य यह

टिप्पणी

है कि जो शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, वे वास्तव में धन प्रदान करने वाले नहीं हैं। अन्य लोग अपनी शिक्षा के लिए टैक्स के द्वारा भुगतान कर रहे हैं। उदाहरण के लिए सरकारी विद्यालयों में निःशुल्क और अनिवार्य प्रारम्भिक शिक्षा (कक्षा I-VIII)। ये बच्चे निःशुल्क शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। जबकि इसका पूरा व्यय सरकार द्वारा वहन किया जा रहा है। इसके लाभ दो प्रकार से समझे जा सकते है :

(1) आर्थिक या मुद्रा संबंधी लाभ

(2) बिना धन (गैर मौद्रिक) के लाभ

आर्थिक लाभ के उदाहरण हैं–व्यक्ति के कार्यरत जीवन की आयु

गैर मौद्रिक लाभों को अप्रत्यक्ष लाभ माना जाता है जैसे:

- अच्छे नागरिक मूल्य
- कार्य-संस्कृति के प्रति ज्ञान, कौशल तथा दृष्टिकोण

शिक्षा के व्यक्तिगत लाभों के अतिरिक्त समुदाय, समाज तथा राष्ट्र भी शिक्षित मानव शक्ति द्वारा भी लाभान्वित होते हैं क्योंकि :

- राष्ट्रीय आय में वृद्धि के रूप में यह सीधे आर्थिक लाभों में वृद्धि करता है, इसलिए कि शिक्षित और कौशल पूर्ण मानव-शक्ति की उत्पादकता निरक्षर मानव शक्ति की उत्पादकता से अधिक होती है।

शिक्षा और प्रशिक्षण हेतु व्यक्ति या समाज की मांग मूल्य-लाभ सिद्धान्त पर आधारित होती है। इसको भारत के संदर्भ में देखें–शिक्षा, शैक्षिक संस्थाओं-विद्यालया तथा महाविद्यालयों का विस्तार किस प्रकार हो रहा है?

12.3.3 सामाजिक मांग

शिक्षा के लिए सामाजिक मांग आर्थिक विकास द्वारा या शैक्षिक विकास द्वारा उत्पन्न/उठती है। प्रत्येक राष्ट्र में आर्थिक विकास वहां के जीवन-स्तर को ऊंचा उठाता है तथा जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाता है। जीवन का यह बढ़ता स्तर सामाजिक अपेक्षाओं: सामाजिक समानता के प्रति जागरूकता, विभिन्न सामाजिक समूह मजबूती से बेसिक शिक्षा (प्राथमिक शिक्षा) को एक मानव-अधिकार के रूप में सुनिश्चित करने हेतु आवाज उठाते हैं। इसीलिए भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के बहुत समय पश्चात् शिक्षा का अधिकार अधिनियम (2009) पारित हुआ और 1 अप्रैल सन् 2010 से पूरे देश में लागू किया जा रहा है। आप इस के मूल तत्त्वों का स्मरण करें जो इस अभिलेख में अन्यत्र दिया गया है।

क्या आप शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के पांच मूल तत्वों को बता सकते हैं?

टिप्पणी

12.3.4 सामाजिक न्याय

भारत के संविधान का लक्ष्य सामाजिक न्याय प्राप्त करना है। भारतीय संविधान का प्रियेम्बल भी सामाजिक न्याय को बताता है। देश के न्यायालय इसको लागू करने के लिए प्रयास सुनिश्चित करते हैं। सरकार तथा विधायिकाएँ कानून बनाती हैं और विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं द्वारा सामाजिक न्याय प्राप्त करने का प्रयास करती हैं। यह कार्य समाज के अपवंचित समूह के हितों की रक्षा के लिए किया जाता है। जैसे–अनुसूचित जाति, अनुसूचित जन-जाति, अन्य पिछड़ी जातियां, अल्पसंख्यक समूह आदि।

क्या आप अपने राज्य में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जन-जाति, अन्य पिछड़ी जातियां, अल्पसंख्यक समूहों के लिए लागू की गई दो शैक्षिक योजनाओं का नाम बता सकते हैं?

- ....
- ....

12.4 विद्यालय और समुदाय की सहभागिता के सुदृढ़ीकरण हेतु प्रत्येक उपागम को प्रासंगिकता

उपरोक्त चर्चा में आपने चार उपागमों का अध्ययन किया–मानव-शक्ति आवश्यकता, मूल्य-लाभ, सामाजिक न्याय तथा सामाजिक मांग। ये सभी शिक्षा एवं इसके प्रबंधन हेतु निम्नलिखित कार्यों में मांग प्रस्तुत करते हैं–

1. शिक्षा एवं प्रशिक्षण के विस्तार में
2. समाज/समुदाय/निजी परिवारों के लिए, जो अपने बच्चों को विद्यालयों में भेजते हैं, वैकल्पिक उपयोग तथा लाभ सुनिश्चित करने हेतु दक्षता एवं प्रभाविकता लाना।
3. सामाजिक तथा आर्थिक असमानताओं की कम करना
4. अच्छी और जिम्मेदार नागरिकता द्वारा राष्ट्र-निर्माण

अच्छी शिक्षा और प्रशिक्षण को सुदृढ़ बनाने हेतु विद्यालय और समुदाय की सहभागिता बहुत महत्त्वपूर्ण है। कैसे? निम्नलिखित समस्याओं पर चिंतन करें–

1. बालिकाएं विद्यालय नहीं जा रही हैं क्योंकि अभिभावक नहीं चाहते।
2. बच्चों में ड्राप-आउट रेट बहुत ऊंचा है।
3. अभिभावक शिक्षक संघ या मातृ-शिक्षक संघ विद्यालय में सक्रिय रूप से विकास योजनाओं में शामिल नहीं है।

उपरोक्त सभी समस्याओं के समाधान की आवश्यकता है। विद्यालय समुदाय सहभागित बहुत आवश्यक है।

टिप्पणी

क्या आप उपरोक्त तीन समस्याओं के समाधान हेतु विद्यालय समुदाय सहभागिता के सुदृढ़ीकरण हेतु कुछ उपाय सुझा सकते हैं?

1. बालिकाएं विद्यालय नहीं जा रही हैं (सुझाव)

    - ....
    - ....
    - ....

2. विद्यालय छोड़ने वाले बच्चों (ड्रापआउट) की उच्च दर (सुझाव)

    - ....
    - ....
    - ....

3. अभिभावक शिक्षक संघ या मातृ शिक्षक संघ का सहयोग प्राप्त करना (सुझाव)

    - ....
    - ....
    - ....

12.5 विद्यालय-सामुदाय सहभागिता का प्रबंधन तथा संगठन और संबंधों को सुदृढ़ बनाने की प्रक्रिया

नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा हेतु बच्चों का अधिकार अधिनियम 2009 (आर.टी.ई. एक्ट, 2009) के अनुभाग 21 के अन्तर्गत विद्यालय प्रबंधन कमेटी (एस.एम.सी.) बनाने का प्रावधान दिया गया है। इसके अन्तर्गत सदस्य हैं–स्थानीय प्रशासन के चुने हुए प्रतिनिधि, विद्यालय के बच्चों अभिभावक/संरक्षक तथा शिक्षक।

विद्यालय प्रबंधन कमेटी निम्नलिखित कार्यों का निष्पादन करेगी–

1. विद्यालय की कार्य-प्रणाली का निरीक्षण/मानीटारिंग
2. विद्यालय विकास योजनाओं का निर्माण तथा संस्तुति
3. सरकार, स्थानीय प्रशासन या अन्य स्रोत द्वारा प्राप्त ग्रान्ट (धन) के उपयोग की मानीटरिंग करना।
4. इसी प्रकार के अन्य प्रदत्त कार्यों को निष्पादित करना।

टिप्पणी

इस प्रकार आर.टी.ई. एक्ट 2009 में विद्यालय-समुदाय सहभागिता और विद्यालय विकास योजना के निर्माण एवं संस्तुति हेतु निर्णय लेने की प्रक्रिया में समुदाय को संलग्न करने हेतु कानूनी प्रावधान किया गया है। विद्यालय प्रबंधन कमेटी को विद्यालय के विकास संबंधी कार्यों को मानीटर करने का अधिकार भी दिया गया है। परन्तु साथ ही विद्यालय और समुदाय के बीच यह सहभागिता बिना एक दूसरे की कार्यात्मक जिम्मेदारियों में प्रविष्ट हुए स्वस्थ एवं वांछनीय होनी चाहिए।

उदाहरण के लिए प्राथमिक तथा उच्च प्राथमिक विद्यालयों के बच्चों के लिए मध्यान्ह अल्पाहार योजना समुदाय के सक्रिय सहयोग से सुचारू रूप से चलाई जा सकती है। इसी प्रकार पी.टी.ए. या एम.टी.ए. के सक्रिय सहयोग से विद्यालय के कार्यक्रमों का आयोजन तथा बच्चों की उपस्थिति की मानीटरिंग की जा सकती है। परन्तु कुछ क्षेत्रों में विद्यालय प्रबंधन की कार्यात्मक जिम्मेदारी स्थानीय प्रशासन या सरकार पर निर्भर होती है। उदाहरण के लिए–विद्यालय शिक्षकों की नियुक्ति उनकी उचित योग्यता तथा नियमों के आधार पर करना। यहां सरकार या स्थानीय प्रशासन के नियम/नियमावली कार्य करती है। विद्यालय प्रबंधन कमेटी विद्यालय में शिक्षकों के रिक्त पदों की सूचना प्रशासन की दे सकती है तथा आवश्यक कार्यवाही हेतु उस पर दबाव डाल सकती है।

12.6 सारांश

इस इकाई में प्रबंधन के उपागम-मानव-शक्ति-आवश्यकता, मूल्य-लाभ, सामाजिक मांग तथा सामाजिक न्याय द्वारा पता लगा कि शिक्षा एवं प्रशिक्षण व्यक्तियों के लिए क्यों आवश्यक है। आपने यह भी सीखा कि शिक्षा एवं प्रशिक्षण केवल व्यक्ति को लाभ नहीं देते बल्कि इससे समुदाय, समाज और अन्ततः पूरे राष्ट्र को लाभ मिलता है। परन्तु शिक्षा तथा शैक्षिक संस्थाओं-विद्यालय, महाविद्यालय, व्यावसायिक कोर्सेस तथा संस्थाएं आदि के विस्तार से देशवासियों के जीवन स्तर की गुणवत्ता में सुधार, उनकी उत्पादकता में वृद्धि, चरित्र निर्माण तथा अच्छी नागरिकता के गुणों का विकास होता है। इसीलिए यह आवश्यक है कि विद्यालय विकास योजना हेतु समुदाय का सहयोग लिया जाय तथा दोनों के बीच (विद्यालय तथा समाज) संबंधों को मजबूत बनाया जाय। आपने यह भी सीखा कि विद्यालय और समुदाय के प्रबंध संबंधी कार्यों में अंतर समझने की आवश्यकता है ताकि विद्यालय और समुदाय के बीच किसी प्रकार का विरोध उत्पन्न न हो।

12.7 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. Garg V.P. (1989) Economics of Education.Metropolitan Book Co. Pvt. Ltd., New Delhi
2. Government of India, Ministry of Human Resource Development (2009): The Right of Children to Free and Compulsory Education Act, 2009, New Delhi.

टिप्पणी

3. Schultz, T.W. Investment in Education. The Equity, Efficiency Quandary. Journal of Political Economy 80, No.3 (Supp: May/June) 1972, p.22

4. Thurow Lester, C. (1972) Education and Economic Equality: The Public Interest, Summer, 1972, Reproduced in the Baxler et.al (ed) Economics and Education Policy; Reader. Longman in association with the Open University Press, 1977, p.353.

5. Constitution of India: See Preamble of the Constitution.

Blaug.Mark (1980) An Introduction to the Economics of Education. Reprint.Penguin.

12.8 अन्त्य इकाई अभ्यास

1. अपने विद्यालय के अभिभावक-शिक्षक संघ/मातृ-शिक्षक संघ ने गत वर्ष किस प्रकार कार्य किया है पर एक केस अध्ययन तैयार कीजिए।

2. निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखकर विद्यालय विकास योजना पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए–

   - आपके विद्यालय में भौतिक सुविधाओं का प्रावधान
   - विद्यालय विकास योजना की प्रगति की मानीटरिंग हेतु विद्यालय विकास कमेटी की भूमिका तथा उत्तरदायित्व।

3. विद्यालय विकास योजना में सहायता करते हुए समुदाय या विद्यालय प्रबंधन कमेटी की भूमिका की कुछ वीडियो क्लीपिंग एकत्रित करें।